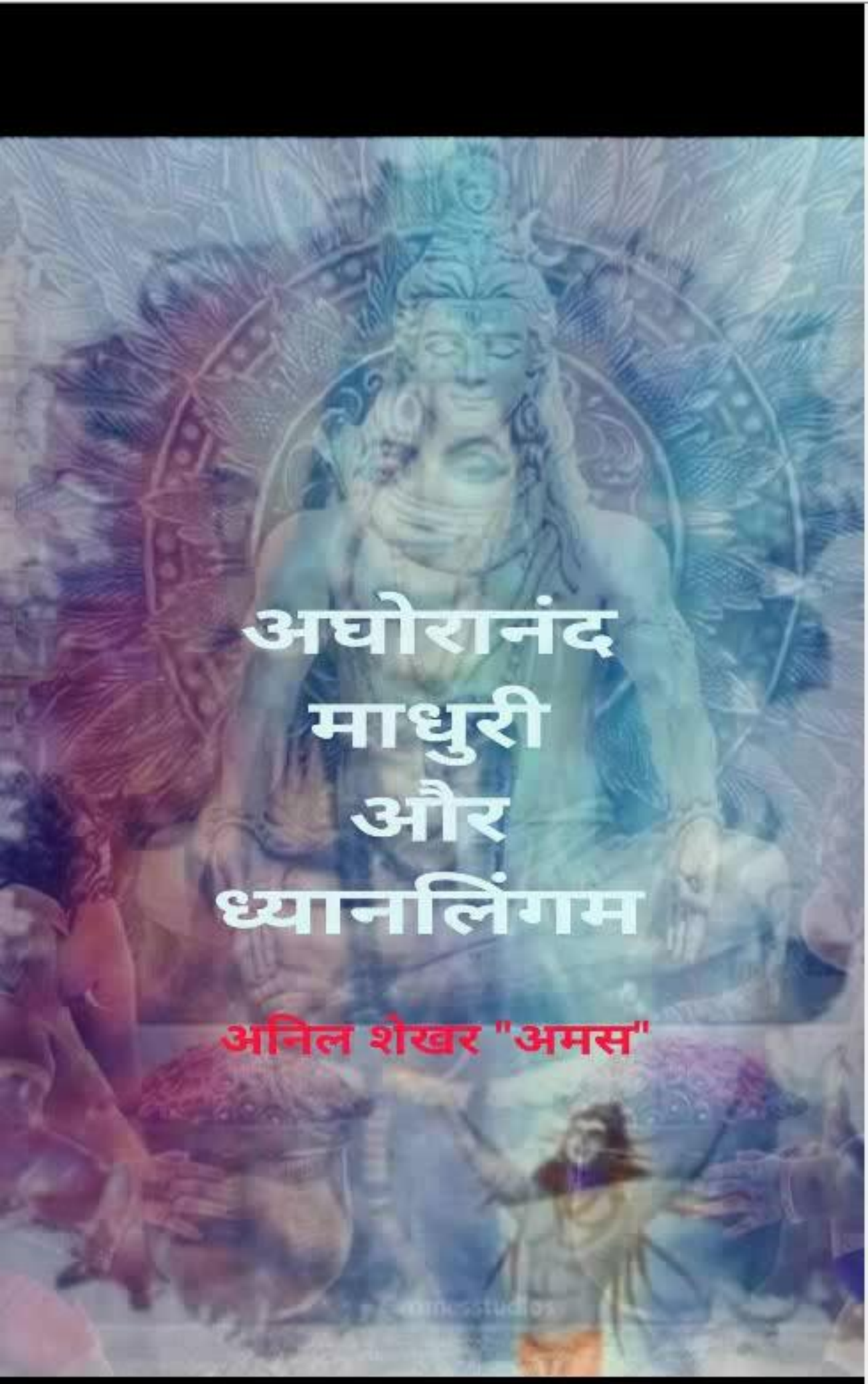
अघोरानंद
माधुरी
और
ध्यानलिंगम
अनिल शेखर "अमस"

॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा का नायक मैं, यानि अघोरानंद, 26 वर्षीय एक गृहस्थ युवा था । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया ।
उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया ।
कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे अघोरानंद नाम दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ ।

साधनात्मक जीवन में मुझे अलग-अलग प्रकार के अनुभव मिले । जिसमें कई बातें ऐसी हैं जो नहीं लिखी

जा सकती । कई बातें ऐसी हैं जो अविश्वसनीय है ।
बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो बेहद रोमांचक हैं और जिसे पढ़ने में आपको आनंद भी आएगा ।

ऐसी ही कुछ घटनाओं को गुरु के आशीर्वाद से और भगवती महानील सरस्वती की कृपा से शब्द श्रंखला में बांधने का प्रयास किया है .....
जो आशा करता हूँ कि आपको पसंद आएगा ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है ।
इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है !
इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है |

अंत में .....
यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है !
उसका आनंद लें ...

सस्नेह :-

अनिल शेखर “अमस”

anilshekhar.amas@gmail.com

भूमिका

जग्गी वासुदेव जिन्हें सद्गुरु के नाम से भी जाना जाता है ईशा फाउंडेशन के संस्थापक हैं और प्रख्यात धर्म उपदेशक भी हैं ।

उनके द्वारा सन 1999 मे दक्षिण भारत में कोयम्बतूर (तामिलनाडू) से लगभग 30 किलोमीटर दूर वेल्लियांगिरी पर्वत की तलहटी में, एक अति विशिष्ट और जागृत ध्यान लिंग [1]की स्थापना की गई है । ध्यान लिंग के विषय में उन्होंने अपने प्रवचनों में कई बार उल्लेख किया है ।

इस विशिष्ट ध्यान लिंग की स्थापना करने के बाद उन्होंने कहा है कि -

“जो लोग ध्यान के अनुभव से वंचित रहे हैं, वे भी ध्यानलिंग मंदिर में सिर्फ कुछ मिनट तक मौन बैठकर ध्यान का अनुभव कर सकते हैं”

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे कि शिवलिंग की आकृतियां पूरे विश्व में कई देशों में पाई जाती हैं । यह आकृतियां सद्गुरु के अनुसार ध्यान करने के लिए सनातन धर्म के अनुयायियों द्वारा बनाए गए विशेष प्रकार के उपकरण या यंत्र हैं ।

जैसा कि आप जानते हैं , भगवान शिव के पूजन मे शिवलिंग का प्रयोग होता है । शिवलिंग के निर्माण के लिये स्वर्णादि विविध धातुओं, मणियों, रत्नों, तथा पत्थरों से लेकर मिट्टी तक का उपयोग होता है । इसके अलावा रस अर्थात पारे को विविध क्रियाओं से ठोस बनाकर भी लिंग निर्माण किया जाता है,

पारद शिवलिंग के बारे में कहा गया है कि,

मृदः कोटि गुणं स्वर्णम, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः,
मणेः कोटि गुणं बाणो, बाणात्कोटि गुणं रसः
रसात्परतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति ॥

अर्थात

मिट्टी से बने शिवलिंग से करोड गुणा ज्यादा फल सोने से बने शिवलिंग के पूजन से,

स्वर्ण से करोड गुणा ज्यादा फल मणि से बने शिवलिंग के पूजन से,
मणि से करोड गुणा ज्यादा फल बाणलिंग के पूजन से तथा
बाणलिंग से करोड गुणा ज्यादा फल रस अर्थात पारे से बने शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है ।
आज तक पारे से बने शिवलिंग से श्रेष्ठ शिवलिंग न तो बना है और न ही बन सकता है ।

सद्गुरु के द्वारा स्थापित किया शिवलिंग पारे से बना हुआ है ।
अर्थात शिवलिंग में जो सबसे उत्कृष्ट माना जाता है उस पदार्थ का बना हुआ शिवलिंग है यह ध्यान लिंग ...
यह लगभग 14 फुट ऊंचा है और दुनिया का सबसे ऊंचा सबसे बड़ा पारद शिवलिंग माना जाता है ।

सद्गुरु के अनुसार उनके द्वारा जो ध्यानलिंग बनाया गया है उस का अनोखापन यह है कि इसमें कुंडलिनी शक्ति के जागरण के संबंध में हमारे शरीर में जिन सात चक्रों की व्याख्या की गई है वह सभी सातों चक्र प्रतिष्ठित हैं ।

ऐसा माना जाता है कि कुंडलिनी शक्ति के यह सात चक्र आपके भौतिक शरीर में जीवन के सात आयामों या जीवन के अनुभव के सात आयामों को दर्शाने वाले सात मौलिक केन्द्र हैं।

ये सात चक्र हैं:-

“मूलाधार” जो जननेन्द्रियों और गुदा-द्वार के बीच स्थित है ।

“स्वाधिष्ठान” जो जननेन्द्रियों के ठीक ऊपर स्थित है ।

“मणिपूरक” जो नाभि के ठीक नीचे स्थित है ।

“अनाहत चक्र” जो पसलियों के मिलने की जगह के ठीक नीचे का कोमल स्थान या हृदय पर है ।

“विशुद्ध चक्र” गले के नीचे के गड्ढे में स्थित है ।

“आज्ञाचक्र” हमारी दोनों भौंह के बीच है ।

“सहस्त्रार चक्र” सिर के ऊपर स्थित है ।

भगवान शिव के विश्व भर में बिखरे हुए शिवलिंग , सद्गुरु के द्वारा स्थापित इस ध्यान लिंग और उनके विवेचन तथा कुछ पुरानी कथाओं को आधार बनाकर मैं यह कथा लिख रहा हूं ।

यह काल्पनिक कथा है और इसमें उल्लेखित किसी भी घटना, स्थान या व्यक्ति का किसी भी वास्तविक घटना, व्यक्ति या स्थान से कोई संबंध नहीं है ।

इसमें दर्शाए गए घटनाएं तथा पात्र भी काल्पनिक है ।
कथा में रोमांच पैदा करने के लिए बली और नरबलि जैसे प्रकरणों का उल्लेख किया गया है ।
लेखक इन प्रथाओं का समर्थन नहीं करता ।

पाठकों से भी निवेदन है कि वह केवल मनोरंजन के लिए इस कथा को पढ़ें और कोई भी गैरकानूनी या अनुचित कार्य न करें ।

सस्नेह आपका

अनिल शेखर “अमस”

anilshekhar.amas@gmail.com

अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गम

पिछली कथा चांदनी महल की आत्माएं [2]में आपने पढ़ा :-

दीपावली की छुट्टी में मैं बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शन करने के लिए गया था । वहां माधुरी से भी मुलाकात हुई साथ ही वहां चांदनी महल और उससे संबंधित कई अनोखी घटनाएं घटी । उन सब से दो-चार होता हुआ कुछ समस्याओं का समाधान करने के बाद अब समय था वापस घर लौटने का...

माधुरी को भी इसी तरफ आना था तो मैं भी उसके साथ उसी की बुलेट पर सवार हो गया और हम दोनों वापसी की यात्रा के लिए निकल पड़े ।

अब आगे ....

बुलेट एक ऐसी गाड़ी है जो काफी वजनी होती है और उसे आप आराम से सौ सवा सौ किलोमीटर की रफ्तार में चला सकते हैं । जाहिर है माधुरी की रफ्तार भी कुछ कुछ ऐसी ही थी ।

सौ किलोमीटर की स्पीड में हम लोग हवा को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे ।

लगभग 3 घंटे के सफर के बाद मेरी आंखें झपक गई !
गाड़ी की रफ्तार के हिसाब से मैं सीट को पकड़कर बैठा हुआ था क्योंकि उस समय सड़कें इतनी अच्छी नहीं हुआ करती थी और बीच-बीच में जंप आ जाते थे ...जिससे माधुरी को कोई लेना-देना नहीं था और उसकी रफ्तार वैसी ही रहती थी ।
जब गाड़ी चलती है .... तो हवा हम से टकराती है....
और जब काफी देर तक ठंडी हवा टकराती रहे ..... तो नींद के झोंके आने लगते हैं ।
मेरी आंखें मुश्किल से दो चार सेकंड के लिए झपकी होंगी और तभी मुझे एक झटका सा लगा ...
झटका लगते ही मैंने अपनी आंखें खोली...
रास्ता मुझे कुछ जाना पहचाना सा लगा ....
हम लोग एक घाटी में थे....
गोल-गोल घुमावदार घाटी जो सांप की तरह चक्कर लगाती हुई ऊपर जा रही थी .....
मैंने थोड़ा ध्यान दिया तो समझ में आया कि यह तो केशकाल घाटी है ।
यह घाटी बस्तर में स्थित है ।

बस्तर छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित है और अपनी प्राकृतिक संपदा के लिए जाना जाता है । इसके अलावा यहां पर लौह अयस्क की खदान है । जो बैलाडीला नामक जगह पर स्थित है । जहां से जापान को लौह अयस्क की सप्लाई की जाती है ।

पूरा बस्तर पहाड़ी इलाका है इसलिए प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है । यहां हरे हरे बड़े-बड़े पेड़ से भरे हुए वन है । जिनमें सागौन से लेकर शीशम तक सभी प्रकार के पेड़ पाए जाते हैं ।

उसी के राजमार्ग में यह घाटी आती है !

जो बेहद घुमावदार भी है ! और खूबसूरत भी ।

इसके घुमावदार होने की वजह से इसमें चढ़ना और उतरना दोनों ही बेहद रोमांचक और डरावना अनुभव होता है ।

इसमें एक तरफ पहाड़ी है और दूसरी तरफ खाई है !

अगर थोड़ी भी चूक हो जाए तो उस गाड़ी का राम नाम सत्य होना तय है ।

मै सोच मे पड गया !

क्योंकि यह घाटी बनारस से दुर्ग आने के रास्ते में तो नहीं पड़ने वाली थी !

मुझे दुर्ग जाना था .... लेकिन यह तो दुर्ग से आगे जाकर जगदलपुर जाने वाले रास्ते में आती है ।

तो मैं सोच में पड़ गया, कि आखिर हम लोग जा कहां रहे हैं ।

उससे बड़ी बात यह थी कि जिस रफ्तार से हम लोग सफर कर रहे थे उसमें आठ दस घंटे का सफर अभी बाकी था ।

उससे पहले ही हम लोग अपनी मंजिल से भी लगभग 300 किलोमीटर आगे आ चुके थे ।

माधुरी जैसी सिद्ध साधिका के साथ इस प्रकार की विचित्र घटनाएं घटना स्वाभाविक और सामान्य बात थी । इसलिए उसके प्रति मैं ज्यादा चिंतित नहीं था, लेकिन रूट बदल जाने से थोड़ा हैरान जरूर था ।

मैंने माधुरी से पूछा - हम लोग इधर कहां जा रहे हैं, यह तो केशकाल घाटी लग रही है ।

माधुरी बोली - गुरु मां ने बुलाया है ।

मैंने पूछा - तुम तो डोम बाबा की शिष्या हो, फिर यह गुरु मां कौन है ?

माधुरी - डोम बाबा से सीखने के बाद मैंने गुरु मां से भी बहुत कुछ सीखा है। उन्हीं के आदेश पर मैं उनसे मिलने जा रही हूं। सोचा तुम्हें भी उनसे मिला दूँ।

तंत्र साधना के क्षेत्र में महिला गुरु को अति विशिष्ट माना जाता है।
ऐसा माना जाता है कि किसी भी स्त्री गुरु से मिला हुआ मंत्र स्वयं सिद्ध मंत्र होता है। वह साधकों को जल्दी सफलता प्रदान करता है।

माधुरी की गुरु मां से मिलने का अवसर मिलना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। जब माधुरी इतनी उच्च कोटि की साधिका है तो उनकी गुरु माता कितनी उच्च कोटि की होगी यह बात तो केवल समझने की थी ....
अतः मैं भी उत्साहित होकर उनसे मिलने के लिए तैयार हो गया।

केशकाल घाटी में तेलीन माई का मंदिर है । उस मंदिर के सामने माधुरी ने अपनी गाड़ी रोकी । जो भी केशकाल घाटी में गाड़ी चलाता है वह तेलीन माई के मंदिर में रुक कर प्रसाद अवश्य लेता है । ऐसा करने से यात्रा सकुशल संपन्न होती है । ऐसा माना जाता है । उसी मान्यता के चलते संभवत: माधुरी भी वहां पर रुकी होगी ।

माता के दरबार में मत्था टेक कर प्रसाद लेकर हम लोग आगे की यात्रा पर चल पड़े । वहां से लगभग 200 किलोमीटर की यात्रा संपन्न करके हम लोग दंतेवाड़ा नामक जगह पहुंचे ।

दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़ के जगदलपुर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित डंकिनी और शंखिनी नदियों के संगम पर स्थित है । यह मंदिर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के कारण जाना जाता है।

यहां सबसे प्राचीन मंदिर का निर्माण करीब 850 साल पहले कराया गया था । डंकिनी और शंखिनी नदी के संगम पर स्थित इस मंदिर का जीर्णोद्धार पहली बार वारंगल से आए पांडव अर्जुन कुल के राजाओं ने करीब

700 साल पहले करवाया था । अर्थात लगभग 14वीं शताब्दी में ।
इसके पश्चात वर्ष 1932-33 में दंतेश्वरी मंदिर का दूसरी बार जीर्णोद्धार तत्कालीन बस्तर महारानी प्रफुल्ल कुमारी देवी ने कराया था ।

यहां स्थित नदी के किनारे अष्ट भैरव का आवास माना जाता है । इसलिए यह स्थल तांत्रिकों के लिए महत्वपूर्ण स्थल है । मान्यता अनुसार यहां आज भी बहुत से तांत्रिक पहाड़ी गुफाओं में तंत्र विद्या की साधना कर रहे हैं ।

ऐसी भी मान्यता है कि वर्ष 1883 तक यहां नर बलि होती रही है । वर्तमान में यह प्रथा बंद है लेकिन पशु और पक्षी बली अभी भी प्रचलन में है ।

गाड़ी मंदिर के सामने खड़ी करके मैं और माधुरी मंदिर की ओर बढ़े । मंदिर का काफी हिस्सा लकड़ी का बना हुआ है । अंदर में देवी की तेजस्वी मूर्ति स्थापित है । हम लोगों ने उन्हे प्रणाम किया । दर्शन के पश्चात हम लोग वापस बाहर निकले ।

मंदिर के बाहर एक गहरे काले रंग का आदिवासी व्यक्ति खड़ा हुआ था । उसने केवल एक लंगोट पहनी हुई थी । देखने से उसकी उम्र का एहसास नहीं होता था । वह लगभग 40 वर्ष के आसपास का रहा होगा... ऐसा मुझे लगा !

उसकी ऊंचाई लगभग 5 फीट रही होगी । शरीर कसा हुआ था, जैसा कि आमतौर पर आदिवासियों का होता है । सिर के बाल घुटे हुए थे यानी कि छोटे-छोटे थे ।

उसकी आंखें गहरे नीले रंग की थी ।

ऐसा आमतौर पर आदिवासी पुरुषों में नहीं पाया जाता है । इसलिए उसकी आंखें बेहद रहस्यमय लग रही थी । उसे देख कर मुझे आभास हो रहा था कि कुछ तो खासियत जरूर है ...

मैं आगे बढ़ रहा था ।
माधुरी पीछे रह गई थी ।

मैं गाड़ी के पास आकर खड़ा हो गया और उसी की ओर देखता रहा ....

वह मंदिर के दरवाजे की ओर मुंह करके खड़ा हुआ था।

...

जैसे उसे बाकी दुनिया से कोई लेना देना नहीं था ।

माधुरी जैसे ही मंदिर से निकली । वह उसकी ओर बढ़ा । माधुरी ने भी आगे बढ़कर उसे गले से लगा लिया । ऐसा लग रहा था जैसे दोनों पुराने परिचित हो ।

उसके बाद माधुरी ने मेरी तरफ इशारा करके कुछ बताया, उसने सिर हिलाया जैसे समझ गया हो ।

माधुरी ने मुझे अपनी तरफ बुलाया और उससे मेरा परिचय कराया ।

उसका नाम था , लखमा ।

लखमा बेहद सरल ढंग से मुस्कुराया । जैसा कि आप लोग जानते ही होंगे कि जंगल में रहने वाले आदिवासी बेहद सरल और सीधे-साधे होते हैं । उनका व्यवहार बेहद सहज और सरल होता है । वह आपका दिल मोह लेता है ।

बिल्कुल वैसा ही था लखमा ।
रंग से काला !
मगर दिल से बिल्कुल सफेद दूध की धारा की तरह शुद्ध ।
उसकी मुस्कुराहट देखकर मैं भी खिलखिला कर हंस दिया ।
कुछ देर में ही उससे आत्मीयता की अनुभूति होने लगी ।

माधुरी ने बताया कि लखमा उसकी गुरु मां का प्रमुख शिष्य है और वहां हमें लेने के लिए आया है ।

उस समय शाम हो रही थी !
लखमा ने मंदिर के पुजारी से बात की और माधुरी की बुलेट को मंदिर के पास बने हुए एक कमरे में रखवा दिया ।

उसके बाद हम तीनों नदी के संगम की ओर बढ़ गए । यहां पर दो नदियों का संगम है । जिन्हें शंखिनी और डंकिनी कहा जाता है । संगम तट पर बने हुए मंदिरों का महत्व सामान्य मंदिरों से ज्यादा कहा गया है । दंतेश्वरी मंदिर को सिद्ध पीठ माना जाता है । काफी पुराना मंदिर

होने के नाते भी और लगातार पूर्ण प्राकृतिक रूप से पूजन आयोजन संपन्न होने के कारण भी यहां देवी का स्वरूप जागृत है।

संगम के पास पहुंचकर हम लोग वहां पर रखी हुई एक छोटी नाव में बैठ गए । उस नाव को खेते हुए लखमा लगभग आधा किलोमीटर आगे ले गया । नदी के दूसरे तट पर नाव को रोक दिया । एक पेड़ से नाव को रस्सी को बांध दिया और वहां से हम तीनों जंगल में प्रवेश कर गए । बस्तर जंगल के मामले में बेहद धनी है । वहां बड़े बड़े पेड़ों से भरे हुए घने जंगल बहुतायत में पाए जाते हैं । यह जंगल भी कुछ कुछ ऐसा ही था ।

सागौन के बड़े-बड़े पेड़ लगे हुए थे ....

शाम ढलने वाली थी....

इसलिए रोशनी धीरे-धीरे कम हो रही थी !

हम जैसे ही जंगल के अंदर घुसे.....

रोशनी की मात्रा और कम होने लगी !

बड़े-बड़े पेड़ थे !

सन्नाटा था !

सिर्फ पत्तियों पर हमारे पांव के पड़ने से होने वाली सरसराहट की आवाज उस सन्नाटे को चीर रही थी ।
जंगल में लगभग डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद कुछ दूर पर आग जलती हुई दिखाई दे रही थी । जिसे देखकर मुझे लगा कि संभवत: वही गुरु माता का आश्रम होगा ।

चलते चलते जब तक हम लोग वहां पहुंचे , तब अंधेरा छा चुका था और उस जलती हुई आग के अलावा दूर-दूर तक कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था ।
झींगुरों के चिल्लाने की आवाज सन्नाटे को बीच-बीच में चीर रही थी !
दूर कहीं उल्लू की आवाज भी आ रही थी !
जब हम लोग वहां पहुंचे तो वहां का दृश्य देखने लायक था ।

लकड़ियां जल रही थी ....
उसके ऊपर एक बड़ी सी कढाई रखी थी और उस कढ़ाई के अंदर एक महिला बैठी हुई थी ।
यह दृश्य मेरी कल्पना से भी परे का था ....
जलते हुए चूल्हे पर रखी हुई कढ़ाई में जिंदा इंसान का बैठना किसी के भी होश उड़ाने के लिए काफी होगा !

उस कढ़ाई में वह महिला बैठी हुई थी !

वह कुछ बुदबुदा रही थी ।

उसके दाहिने हाथ में एक लगभग डेढ़ फुट लंबा हड्डी का टुकड़ा था ।

बाएं हाथ में एक बेहद छोटी सी माला थी ।

माला किसी अजीब सी चीज की बनी हुई थी ।

जो आड़े तिरछे आकार की थी ।

ऐसा लग रहा था जैसे जमीन से पत्थरों के टुकड़ों को निकाल कर उससे माला बना दी गई हो । उस माला के मनको को वह फिरा रही थी ।

उसके गले में एक नरमुंड लटका हुआ था, जो किसी बच्चे का लग रहा था । उसकी आकृति नारियल के गोले के बराबर की रही होगी ... इसलिए संभवतः वह किसी बच्चे की मालूम होती थी ।

पास में ही तीन काले रंग के मुर्गे एक रस्सी में बंधे हुए पड़े थे, जो संभवतः बलि के लिए लाए गए होंगे ।

वह महिला पूरी तरह से निर्वस्त्र थी !

उसके बाल कंधों तक और उसके मुख के सामने से होते हुए उसके स्तनों के ऊपर तक बिखरे हुए थे ।
उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था !
लेकिन.....
उसकी शरीर की आकृति देखकर ऐसा लग रहा था जैसे 55-60 वर्ष की महिला रही होगी ।

तंत्र साधना के क्षेत्र में आने के बाद मुझे यह तो पता चल ही गया था कि जो दिखता है वह होता नहीं है और जो होता है वह दिखता नहीं है .....

इसलिए उसकी उम्र का सही सही अंदाजा लगाना नामुमकिन था ! फिर भी मेरी बुद्धि के अनुसार मुझे वह बुजुर्ग महिला लग रही थी ।

मुझे लगा वही गुरु मां होगी ।

माधुरी ने हाथ जोड़कर उनको प्रणाम किया !
वे उसी प्रकार आंख बंद कर उस कढ़ाई में बैठी रही !
नीचे आग जल रही थी !

उसकी लपटें बर्तन से टकरा भी रही थी । लेकिन वह ऐसे बैठी थी जैसे ठंडे पानी में बैठी हुई है । जबकि पानी के अंदर से उठती हुई भाप भी दिखाई दे रही थी .....

इस प्रकार का दृश्य मैंने पहली बार देखा था । तंत्र साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद अजीब अजीब चीजें देखने को मिलती है । उन्मे से यह भी एक थी ।

साधना में हठयोग का भी एक अलग महत्व है । आपने कुंभ मेले में आने वाले विचित्र हठ योगियों को अवश्य देखा होगा ।
जिसमें से कुछ ऐसे होते हैं जो कांटे के आसन पर बैठते हैं या कील के आसन पर बैठते हैं ।
कुछ ऐसे होते हैं जो वर्षों से अपना एक हाथ ऊपर उठाकर रखे होते हैं और वह हाथ उसी प्रकार से जड़ हो गया होता है।
कुछ साधु ऐसे होते हैं जिन्होंने अपना एक पैर मोड़ कर रखा होता है और वह वैसा ही मुड़ा मुड़ा रह जाता है क्योंकि वर्षों से वे उसी मुद्रा में खड़े रहते हैं ।

कुछ साधु ऐसे होते हैं जो केवल जल ग्रहण करके जीवित रहते हैं ।

कुछ साधु ऐसे होते हैं जो केवल दूध पी के जीवित रहते हैं ।

कुछ साधु ऐसे होते हैं जो केवल फलाहार पर जीवित रहते हैं ।

सनातन धर्म में अलग-अलग प्रकार के विचार और भाव के साथ साधना करने की छूट होती है जो कि आमतौर पर सभी धर्मों में नहीं पाई जाती ।
यहां आप किसी भी विचारधारा को .....
जो आपको पसंद हो....
उसे अपना कर .....
अपने हिसाब से साधना या मंत्र जाप या योग ध्यान कर सकते हैं .....
और उसमें किसी को कोई दिक्कत नहीं होती ।

सनातन धर्म परम सत्ता से साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए प्रयास करने को प्रमुख मानता है ।

मार्ग या विधि उतनी महत्वपूर्ण नहीं है ।
वह कुछ भी हो सकती है ...
इसलिए सनातन धर्म में आपको अनेक प्रकार के पंथ भी मिलेंगे ।
अनेक प्रकार के साधु भी मिलेंगे ।
अनेक प्रकार की साधना और ध्यान की विधियां भी मिलेंगी, जिनमें से अलग-अलग मार्गों से अलग-अलग लोगों ने सफलताएं भी प्राप्त की होंगी ।
मुझे यही सनातन धर्म का शाश्वत सौन्दर्य लगता है ।

मैंने भी श्रद्धा से उनको प्रणाम किया । मैं इस सोच में था कि वही गुरु माता होंगी लेकिन तब तक माधुरी आगे बढ़ चुकी थी और उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया । मैं पीछे-पीछे चला ।

कुछ दूर आगे जाने पर एक छोटी सी झोपड़ी बनी हुई थी ।
उस झोपड़ी के दरवाजे पर एक हट्टा कट्टा जवान व्यक्ति खड़ा हुआ था जो देखने से ही बाउंसर जैसा लगता था ।
उसकी वेशभूषा भी वैसी ही थी ।
शरीर पर केवल एक लंगोट था ।

हां !
उसके कंधे पर एक धनुष और तीर का गुच्छा जरूर लटक रहा था ।

उसकी मुद्रा ऐसी थी कि वह किसी को भी तीर मारने से शायद एक क्षण को भी नहीं झिझकता ।

बस्तर के आदिवासियों का प्रमुख शस्त्र है तीर कमान । अब परिस्थितियां बदल चुकी है लेकिन उस समय आपसी लड़ाई में भी तीर कमान का प्रयोग हो जाता था और कभी-कभी गंभीर चोट भी लग जाती थी !

माधुरी के आगे बढ़ते ही वह उसके सामने खड़ा हो गया, जैसे अंदर जाने के लिए रोक रहा हो ।

यह बिल्कुल वैसा ही सीन था, जैसा संभवत: तब रहा होगा, जब गणेश भगवान ने भगवान शिव को माता पार्वती की गुफा में प्रवेश करने से रोका होगा ।
कथा है कि कैलाश पर्वत पर जितने भी गण थे वे भगवान शिव के थे । वे देवी पार्वती के आदेश से ज्यादा भगवान शिव के आदेश का पालन करते थे ।

इससे विचलित होकर भगवान शिव की अनुपस्थिति में देवी पार्वती ने एक गण गणेश की रचना की । उसे देवी ने अपनी गुफा का सुरक्षा का भार सौंपा । जो भी गुफा में प्रवेश करना चाहता , वह उसकी अनुमति के बिना अंदर नहीं आ सकता था । वह गण माता पार्वती के सानिध्य में रहता और केवल उन्हीं के आदेश का पालन करता । वह धीरे धीरे बड़ा होता गया ।

काफी समय बीत गया ।
एक दिन जब भगवान शिव वापस कैलाश लौटे तो वह देवी पार्वती की गुफा में प्रवेश करने लगे .... लेकिन उस बालक ने उनका मार्ग रोक लिया ।
भगवान शिव हकबका गए कि यह कहां से आ गया ।
वह कैलाश पर्वत के अधिपति थे.....
वहां पर उनका एकछत्र राज्य चलता था ।
कोई भी उनके मार्ग में नहीं आता था ।
यह नन्हा बालक अज्ञानतावश उन्हें रोकने का प्रयास कर रहा है यह सोच कर वे थोड़ा ठिठके और उसे हटने के लिए कहा । लेकिन बालक गणेश तो महामाया के

अलावा किसी का आदेश मानने के लिए बना ही नहीं था ।

उसने भगवान शिव को वहीं पर रोक लिया ।

उसके रोकने पर भगवान शिव क्रोधित होने लगे थे ।

उसके बाद जो हुआ वह आप जानते ही हैं ।

कुछ ऐसी ही स्थिति यहां पर भी बन गई थी ।

उस रक्षक के रोकते ही माधुरी की भवें तन गई थी ।

माधुरी सामान्यतः क्रोधित नहीं होती थी , लेकिन अगर क्रोधित हो गई तो सामने वाले को कोई बचा नहीं सकता, यह बात मैं भी जानता था । मैं किसी अनिष्ट की आशंका से थोड़ा विचलित हुआ ।

तभी पीछे से लखमा की आवाज आई - माई को बोलो, मोंको आई है ।

यह सुनते ही उसके चेहरे के भाव बदल गए । उसने माधुरी को वही ठहरने का इशारा किया और झोपड़ी के अंदर चला गया ।

संभवतः वह गुरु माता से अनुमति मांगने के लिए गया होगा । कुछ क्षण में वह वापस लौटा तो उसके साथ गुरु माता भी थी । माधुरी को देखकर प्रसन्नता से उनके चेहरे पर मुस्कान बिखर गई ।
उन्होंने खुशी से आवाज दी - मोंको !

माधुरी किसी बच्चे की तरह उनकी ओर दौड़ पड़ी ।
उन्होंने उसे उसी प्रकार अपनी बाहों में समेट लिया ।

गुरु माता मध्यम कद की महिला थी ।
उनका रंग बिल्कुल काला था ।
उन्होंने एक साड़ी पहनी हुई थी जो उनके घुटनों तक लंबाई में थी जैसा कि आदिवासी महिलाओं का वेश होता है ।
उनकी सुगढ़ देहयष्टि किसी युवती की तरह लग रही थी । चेहरे के अलावा शरीर के किसी भी अंग से उनकी उम्र का आभास नहीं होता था । चेहरा देखकर उनकी उम्र मुझे यही कोई 40-45 साल की लगी ।
उनका चेहरा बेहद तेजस्वी था । उनके चेहरे मे सबसे खास थी उनकी नीली आंखें ।
ऐसा लगता था जैसे शरीर को भेद कर निकल जाएंगी !

बेहद चमकदार आंखें .....
जब उनका मिलन पूरा हो गया तो गुरु माता ने मेरी तरफ देखा !
मैंने उनको झुककर प्रणाम किया ।
उन्होंने मेरे सर पर आशीर्वाद का हाथ फेरा ।

वह हमे अपनी झोपड़ी के अंदर ले गई । झोपड़ी के अंदर नीले नीले रंग के लगभग टेनिस बॉल के आकार के खुरदुरे पत्थर रखे हुए थे । जो रत्न वाले पत्थर की तरह लग रहे थे । वे संख्या में नौ थे, और त्रिकोण के आकार में रखे हुए थे । उस त्रिकोण के भीतर एक नरमुंड रखा हुआ था । उसके आस पास बहुत सारी विचित्र चीजें बिखरी हुई थी । कमरे में चटाई बिछी हुई थी । हम तीनों उस पर जाकर बैठ गए ।
चर्चा के दौरान माधुरी से मिलने की बात चली तो मैंने उनसे पूछा - माधुरी आप से कैसे मिली ?

उन्होंने बताया - यह एक लंबी कथा है पहले मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने की व्यवस्था करती हूं फिर इस पर बात करेंगे ।

उन्होंने हमें वही बैठने के लिए कहा और झोपड़ी से बाहर निकल गई । कुछ देर के बाद दो तुम्बे एक महिला ने लाकर हमारे सामने रख दिए । यह लौकी या तुरई से बनती है । लौकी आजकल लंबी मिलती है वह वास्तव में हाइब्रिड लोकी है । जो देसी लौकी होती है वह कलश टाइप की दिखती है । उसमें नीचे बड़ा गोल सा हिस्सा होता है और ऊपर की तरफ छोटा गोल हिस्सा होता है । इसे सूखने के बाद ऊपर से काटकर अंदर का पूरा गूदा निकाल दिया जाता था और उसे किसी वाटर बोटल की तरह इस्तेमाल किया जाता है । इसे आप नेचुरल वाटर बोटल कह सकते हैं ।

उसमें सल्फी थी ।
सल्फी अर्थात बस्तर के जंगलों में पाया जाने वाला एक प्रकार का शराब है जो ताड़ के पेड़ों से निकलता है । आदिवासियों के जीवन में सल्फी का महत्व ठीक वैसा ही है जैसा हम लोगों के जीवन में किसी अतिथि के आने पर उसे चाय पिलाने का होता है । यह उसके स्वागत का प्रतीक माना जाता है । माधुरी ने उसे उठाकर होठों

से लगा लिया । उसकी देखा देखी मैंने भी उसे उठाकर पीना प्रारंभ कर दिया !

वह स्वादिष्ट था ।

गुरुमाता ने बीड़ी का कट्टा माधुरी की तरफ बढ़ाया । माधुरी ने तीन बीड़ी निकाली और उसे जलाया ! उसके बाद उसे हवा में दो तीन बार हिलाया !

ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि बीड़ी की आग जोर पकड़ ले क्योंकि बीड़ी सिगरेट की तरह नहीं होती जो एक बार जलाने पर जलती रहे । उसके बाद माधुरी ने एक बीड़ी गुरु माता की तरह बढ़ाई और एक मेरी तरफ बढ़ा दी । हम तीनों ने बीड़ियों के कश मारे । तब तक एक और तुम्बा आ गया था । इसमें था माडी यानी खूब सारे पानी में पकाया हुआ चावल । वही उनका भोजन था । हम लोगों ने भी उसे ग्रहण किया । साथ में था चटपटा सा चटनी जैसा कुछ जो बेहद स्वादिष्ट लग रहा था !

बाद में माधुरी ने बताया कि वह लाल चींटी की चटनी थी ।

भोजन से निपट जाने के बाद मैंने अपना प्रश्न दोबारा से रखा तो गुरु माता ने बताना प्रारंभ किया । वह माधुरी को मोंको ही कहती थी .....

गुरुमाता बोली - केशकाल घाटी के तेलिन माई के मंदिर के पास एक गुफा में उन दिनों मैं रहा करती थी । मोंको उस दिन केशकाल घाटी से गुजर रही थी और उसकी जीप खाई में गिर गई ।

केशकाल घाटी बहुत घुमावदार घाटी है । वहां पर अगर कोई वाहन पलट जाए तो उसे उठाना मुश्किल होता है । इसलिए उसे खाई में ढकेल दिया जाता है । ताकि रोड क्लियर हो सके । खाई इतनी गहरी है कि उसमें गिरी हुई गाड़ी का कचूमर निकल जाता है । उसे वहां से ऊपर निकालना लगभग असंभव जैसा काम है । मोंको की जीप का भी कचूमर निकल गया था ।
लखमा ने उसको देख लिया । जब लखमा और उसके साथी नीचे पहुंचे तो मोंको जीवित थी । वे उसे उठाकर अपनी गुफा में ले आए । उसके शरीर में बहुत ज्यादा चोट नहीं लगी थी लेकिन वह बेहोश थी । दो दिन के बाद उसे होश आया । होश आने के बाद उसे कुछ

भी याद नहीं था । उसकी याददाश्त खो चुकी थी ।
वहां हमारा पूरा समूह था । लखमा और मेरे 12 शिष्य शिष्यायें वहीं पर साधना कर रहे थे । यह भी उनके साथ रहने लगी । एक दिन जब सभी लोग अपने देवता का आह्वान कर रहे थे तब यह भी उन लोगों के साथ बैठी हुई थी । मोंको यह सब देख कर बैठी रहती थी ।
लेकिन उस दिन कुछ अजीब सा घटित हुआ ।
मोंको की आंखें चढ़ गई और वह अपने स्थान पर हिलने लगी । ऐसा तब होता है जब देवता शरीर में प्रवेश करते हैं । इसके बाद उसने अचानक कुछ मुद्राएं दिखाते हुए नृत्य करना प्रारंभ कर दिया । उसके ऐसा करते ही हमारे देवता का विग्रह हिलने लगा । ऐसा तभी होता था जब वह प्रसन्न होते थे । ऐसी घटना वर्षों में एक आध बार घटित होती थी ।
उस समय मैं अपनी साधना में लीन थी और एक अन्य गुफा में बैठी हुई थी ।
उस घटना से शिष्यों को यह समझ में आ गया कि यह भी हमारे ही तंत्र क्षेत्र की राही है ।

जब मैं वापस लौटी तो उन्होंने मुझे मोंको के बारे मे बताया । उसके बाद मैंने उसे दीक्षा दी और उसे नाम दिया मोंको । उनके साथ ही वह भी विभिन्न प्रकार की तंत्र क्रियाएं सीखने लगी और धीरे-धीरे उस में महारत भी हासिल करने लगी । इसमे प्रतिभा बहुत है । जिन साधनाओं को करने मे अन्य शिष्यों को महीनों लगते उन्हे यह कुछ दिनों मे ही पूर्ण कर डालती थी । लगभग एक साल तक वह हमारे साथ रही । इस दौरान जो भी मुझे आता था वह सब इसने सीख लिया ।

माधुरी की चमत्कारिक शक्तियों को मैं कई बार देख चुका था । साधनात्मक रूप से वह अद्भुत शक्तियों की स्वामिनी थी, तो स्वाभाविक था कि उसकी गुरु माता भी अद्भुत होंगी ।
इसलिए उनके विषय में जानने को मेरे मन में उत्सुकता जागी ।

मन में अगर कोई प्रश्न आए ....
तो !
अगर आप उसे दबा कर बैठ जाएं तो संभावना यह होती है कि आपको उसका उत्तर नहीं मिलेगा ।

लेकिन.....

अगर आपने प्रश्न कर दिया .....

तो !

उसके उत्तर मिलने की संभावनाएं बढ़ जाती है ।

मैं इस लॉजिक पर चलता था, और अधिकांश मामलों में प्रश्न पूछ लिया करता था, तो मैंने गुरु माता के विषय में भी यही किया ।

मैंने गुरु माता से पूछा - आप यहां कब से हैं क्या आप बस्तर की ही हैं ?

उन्होंने जो बताया वह एक रोमांचक और आश्चर्यजनक कथा थी ।

उन्होंने कहा - मैं मूल रूप से आंध्र प्रदेश की रहने वाली हूं । आज से लगभग 40 साल पहले की बात है ।

उस समय मेरी उम्र 25 साल की थी । मेरे माता-पिता दोनों का देहांत हो चुका था । मैं एक अनाथ आश्रम में पलकर बड़ी हुई थी । इसलिए अपने काम खुद करना मुझे आता था और मैं किसी और के ऊपर आश्रित कभी नहीं रही ।

मैंने इंजीनियरिंग की डिग्री ली हुई थी और मद्रास के इंटीग्रल कोच फैक्ट्री में इंटर्नशिप कर रही थी । मद्रास में जो फैक्ट्री है वह रेल के डिब्बे बनाने का काम करती है । यह फैक्ट्री काफी पुरानी है संभवतः भारत की सबसे पुरानी रेल कोच फैक्ट्री है । उस समय वहाँ रशियन इंजीनियर हुआ करते थे !

मुझे घूमने का बहुत शौक था । उस समय मैं बस्तर घूमने के लिए आई थी । चित्रकूट जलप्रपात देखने के लिए मैं जब पहुंची तो उस समय काफी शाम हो चुकी थी । हल्की हल्की बारिश हो रही थी और मैं जलप्रपात की खूबसूरती का आनंद ले रही थी ।

“भारतीय नियाग्रा” के नाम से प्रसिद्ध चित्रकूट अथवा चित्रकोट जलप्रपात छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर ज़िले में इन्द्रावती नदी पर स्थित एक सुंदर जलप्रपात है । यह जलप्रपात पौन किलोमीटर चौड़ा और 90 फीट ऊँचा है ।

इस जलप्रपात की विशेषता यह है कि वर्षा के दिनों में यह लाल जैसे रंग का होता है, तो गर्मियों की चाँदनी रात में यह बिल्कुल सफ़ेद दिखाई देता है ।
जगदलपुर से 40 कि.मी. और छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 273 कि.मी. की दूरी पर स्थित यह जलप्रपात छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा, सबसे चौड़ा और सबसे ज्यादा जल की मात्रा प्रवाहित करने वाला जलप्रपात है । यह झरना घोड़े की नाल के समान आकार में है और इसकी तुलना विश्व प्रसिद्ध नियाग्रा प्रपात से की जाती है।
वर्षा ऋतु में इन झरनों की ख़ूबसूरती अत्यधिक बढ़ जाती है । अलग अलग अवसरों पर इस जलप्रपात से कम से कम तीन और अधिकतम सात धाराएँ गिरती हैं। घने जंगल और पहाड़ों के बीच बने हुए इस जल प्रपात को देखना बेहद रोमांचकारी अनुभव था ।
पहाड़ की भरपूर ऊंचाई से गिरती हुई विशाल जलराशि की गर्जना रोमांच और सिहरन पैदा कर रही थी ।
मैं मंत्रमुग्ध सी उस दृश्य को देखती हुई खड़ी थी ।

प्रकृति के आप जितने करीब जाते हैं, आपको ह्रदय में उतनी ज्यादा आनंद की अनुभूति होने लगती है ।
कुछ वैसा ही मेरे साथ भी हो रहा था ।

उस सौंदर्य के सानिध्य में....
प्रकृति की कृपा के बीच .....
मुझे समय का पता ही नहीं चला !

मैं आगे बढ़ते बढ़ते उसी जलप्रपात के पास बनी हुई पार्वती गुफा के पास चली गई । वहां एक शिव मंदिर भी बना हुआ है । शिव मंदिर के पास पहुंचकर मुझे कुछ अजीब सी अनुभूति होने लगी.....

ऐसा लगा जैसे वहां कुछ अद्भुत सा हो.....

मैं वहीं पर ठिठक कर खड़ी हो गई ।
तभी .....
कुछ दूरी पर एक आदिवासी खड़ा हुआ दिखा !
वह पूर्णत: नग्न था ।
मैं उसकी ओर देख ही रही थी कि तभी उसने मुझे अपनी तरफ आने का इशारा किया ।

युवावस्था थी ....
और किसी नग्न पुरुष की ओर इस प्रकार से जाने का मतलब मैं भी समझती थी ।
इसलिए स्वाभाविक रूप से मुझे हिचकना चाहिए था !

लेकिन.....
किसी अज्ञात शक्ति ने जैसे मुझे ढकेल कर उसकी और भेज दिया हो.....
मैं धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ती चली गई !
जब मैं उसके पास पहुंची तो वह मुड़कर आगे चलने लगा !
मैं मंत्रमुग्ध सी उसके पीछे पीछे चल रही थी ।

बड़ा अजीब सा दृश्य था !
एक पूर्ण नग्न आदिवासी आगे आगे चल रहा है और उसके पीछे पीछे एक काँजीवरम साड़ी पहनी हुई महिला घने जंगलों से होती हुई जा रही है ।
लगभग एक किलोमीटर तक हम लोग जंगल के अंदर चले होंगे तब तक मुझे थकान होने लगी ।
बड़े जोरों की प्यास लग रही थी .....

मेरी हालत देखकर वह समझ गया कि मैं थक गई हूं । उसने अपनी कमर पर बंधे हुए तुंबे को मेरी तरफ बढ़ाया । उसमें अजीब से स्वाद वाला कोई द्रव था ! उस समय मेरे पास उसके अलावा कोई ऑप्शन नहीं था तो मैं उसी को गटागट पी गई । उसे पीते ही थोड़ी देर के लिए सर घूमता हुआ सा महसूस हुआ और मैं बेहोश हो गई ।

जब मुझे होश आया तो रात गहरा चुकी थी । संभवत: अर्ध रात्रि का समय हो चुका होगा या 10 तो बज ही चुके होंगे ।

अंधेरे की वजह से समय का स्पष्ट अंदाज लगाना मेरे लिए संभव नहीं था ।

मैंने आसपास देखा ।

मैं घने जंगलों के बीच एक जंगली कबीले में मौजूद थी ।

एक तरफ लकड़िया जल रही थी ।

सामने एक तरफ एक अनगढ़ सी मूर्ति थी ।

जो संभवत: किसी देवी की रही होगी ।

मूर्ति की ऊंचाई लगभग ढाई तीन फीट की रही होगी ।

वह मोरम जैसे किसी पत्थर की बनी हुई थी !

हल्के बादामी लाल रंग की ।

उसके सामने खप्पर जैसा कुछ रखा हुआ था । जिसमें गाढ़ा गाढ़ा कोई द्रव भरा हुआ था । जिसे जला दिया गया था । वह द्रव कुछ-कुछ वैसा जल रहा था जैसे कढ़ाई में तेल जलता है । संभवतः किसी पेड़ की राल रही होगी ।

कई पेड़ ऐसे होते हैं जिनके छाल पर द्रव बाहर निकलता रहता है , जो कई प्रकार के काम आता है जिसे राल कहते हैं , जिसे अंग्रेजी मे रेजिन भी कहा जाता है । राल गोंद जैसा हाइड्रोकार्बन द्रव्य होता है जो वृक्षों की छाल और लकड़ी से निकलता है । इसका प्रयोग गोंद, लकड़ी की रोग़न (वार्निश), सुगंध और अगरबत्तियाँ बनाने के लिए सदियों से होता आया है । कभी-कभी राल जमकर पत्थर हो जाता है और बड़े डलों का रूप ले लेता है जो समय के साथ ज़मीन में दफ़्न हो जाते हैं। लाखों साल बाद यह कहरुवे (ऐम्बर) के नाम से बहुमूल्य पत्थरों की तरह निकाले जाते हैं और आभूषणों में इस्तेमाल होते हैं ।

लाख भी एक प्रकार का राल है जो चूड़ियां आदि बनाने में होता है । महाभारत में पांडवों को जलाने के लिए बने लाक्षागृह का निर्माण भी इसी प्रकार की लाख से किया गया था । जिससे आप समझ सकते हैं कि यह काफी प्राचीन काल से मनुष्यों के द्वारा उपयोग में लाया जाता रहा है ।
खैर .....

उस लाल मूर्ति के सामने लगभग 6 फुट लंबा और 2 फीट चौड़ा एक विशालकाय पत्थर का चबूतरा बना हुआ था । जिसमें चारों तरफ चार मोठे लकड़ी के लकड़ी के खंभे खड़े थे ।

उसी पत्थर के ऊपर मुझे निर्वस्त्र अवस्था में लिटा दिया गया था ।
मेरे दोनों हाथ और पैर उन्हीं खंभों से बंधे हुए थे ।
मैं जोर जोर से चिल्लाना चाहती थी लेकिन मेरे मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी ।

जिस परिस्थिति में मैं पड़ी थी वहां पर चिल्लाने का भी कोई खास फायदा नहीं होता । फिर भी मैं लगातार

प्रयास कर रही थी लेकिन मेरे मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी ।

एक तरफ दो लोग छोटे नगाड़े जैसी कोई चीज पीट रहे थे । जिसकी रहस्यमय ध्वनि गूंज रही थी और उसकी धुन पर कुछ पुरुष और महिलाएं नृत्य कर रही थी । एक व्यक्ति उस मूर्ति के सामने बैठा हुआ था और कुछ अजीब अजीब सी प्रक्रियाएं संपन्न कर रहा था बीच-बीच में वह कुछ फूल और पत्ते भी देवी को समर्पित कर रहा था । जिससे मुझे लगा कि वह उस देवी का पूजन संपन्न कर रहा है ।

उस अजीब से वातावरण में मेरे प्राण हलक को आ रहे थे, लेकिन मेरे हाथ में कुछ भी नहीं था ।
मैं कुछ देर प्रयास करने के बाद शांत हो गई ।
यह सोच कर कि अब जो होगा वह देखा जाएगा ।
आसन्न मृत्यु की आशंका से मेरे प्राण थरथरा रहे थे !
मेरे पास करने लायक कुछ नहीं था । क्योंकि हाथ और पैर खींचकर बंधे हुए थे । जिनको मैं ना तो पास ला सकती थी और ना ही उन मोटी रस्सियों को तोड़ सकती थी ।

कुछ समय और बीता.....
उसके बाद मूर्ति के सामने बैठा हुआ व्यक्ति मेरे पास आ गया ।
उसके हाथ में एक पात्र था । जिसमें संभवत: महुवे की शराब रही होगी । उसने उसे मेरे मुंह में उड़ेल दिया । मैंने मुंह को कसकर बंद रखने की कोशिश की लेकिन वह व्यक्ति हट्टा कट्टा व शक्तिशाली था । उसने मेरे मुंह को खोलकर जबरदस्ती उस शराब को मेरे मुंह में डाल दिया । जैसे ही वह गले से नीचे उतरी उसके कुछ देर के बाद मेरा सर घूमने लगा ।
अब मैं स्थिर पड़ी हुई थी ।

वे लोग संभवत मेरी बलि की तैयारी में थे ।
पुजारी ने मेरे माथे पर तिलक लगाया और मेरे शरीर के अन्य अंगों पर भी फूल और पत्ते चढ़ाए ।

अब मैं अपने घूमने आने के निर्णय पर पछता रही थी । अच्छा खासा मद्रास में अपना काम कर रही थी और यह अजीब सी मौत मरने के लिए यहां इन आदिवासियों के बीच में आ गई । यही विचार मेरे मन में घूम रहा था ।

लेकिन अब वह सब सोचने का कोई फायदा नहीं था .....

बाजे की आवाज की तीव्रता बढ़ती जा रही थी ..... उसी के साथ बढ़ती जा रही थी उन लोगों के नृत्य की तीव्रता ...

अब वे लोग मेरे चारों तरफ घूम घूम कर एक गोल घेरे में नृत्य कर रहे थे । मैं अवश अवस्था में उनके उस नृत्य को देख रही थी .....
जो संभवतः मेरी मृत्यु की खुशी में वह कर रहे थे !

आप लोगों ने भी देखा होगा कि जिन स्थानों पर इस प्रकार के सामूहिक आयोजन होते हैं, वहां पर वाद्य यंत्रों को जिस प्रकार से बजाया जाता है, वह उपस्थित जनमानस के ऊपर बहुत प्रभाव डालता है । जिसके चलते आपके अंदर उन्माद सा आने लगता है । बहुत सारे लोग नृत्य करना या झूमना प्रारंभ कर देते हैं ।
यह संभवतः उन ध्वनि तरंगों के हमारे मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव की वजह से होगा ।

भूत भगाने वाली जगहों पर भी इस प्रकार की चीजें मैंने देखी है । वहां भी नगाड़ा या ऐसा ही कोई वाद्य यंत्र जो बहुत जोरदार आवाज करता है वह एक लयबद्ध तरीके से बजाया जाता है । जिसके चलते वहां उपस्थित लोग झूमने जैसी अवस्था में आ जाते हैं ।

आपने पंजाबी भांगड़े का म्यूजिक जरूर सुना होगा , यदि आप अकेले होंगे तो निश्चित रूप से आपको नाचने की इच्छा जागृत हो जाएगी । कम से कम हाथ पैर तो आपके हिलने ही लगेंगे । यह ध्वनि का आपके ऊपर पड़ने वाला प्रभाव है ।
मंत्र भी एक प्रकार की ध्वनि है !
जो इस ध्वनि की कला में मास्टरी हासिल कर लेता है, उसे सिद्ध कहा जाता है । वह फिर इन मंत्र ध्वनियों के माध्यम से बहुत सारी असंभव चीजें भी कर लेता है ।
यही मंत्र और ध्वनि का विज्ञान है ।

खैर .....
वह सारे लोग मेरी मृत्यु का नृत्य कर रहे थे ।
मैं अवश अवस्था में लेटी हुई अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही थी । उस पुजारी ने देवी की मूर्ति के पास रखे

हुए तलवार जैसे एक शस्त्र को उठा लिया था और उसकी पूजा कर रहा था ।
धीरे-धीरे वाद्य की ध्वनियां बढ़ती जा रही थी और उनके नृत्य की तेजी भी .....

पुजारी अपने शस्त्र को लेकर मेरे सिरहाने आकर खड़ा हो चुका था ।
मैं अपनी आंखें जोर से भींचकर अपने सभी देवी देवताओं को याद करके किसी चमत्कार के होने की उम्मीद कर रही थी , और उस दिन को कोस रही थी जब मैंने चित्रकूट जलप्रपात देखने के विषय में विचार किया था ।

तभी एक बुलंद आवाज गूंजी .....
अचानक से सब कुछ रुक गया ।
सारे लोग एक तरफ देखने लग गए ।
मैंने भी मुड़ कर उधर देखा .....

सारे लोग झुक कर उधर प्रणाम कर रहे थे !
जिससे मुझे पता चल गया कि यह सारे लोग उसका सम्मान करते हैं ।

वहां खड़ा था .....

एक अधेड़ उम्र का पुरुष !

जिसकी आयु लगभग 50 के आसपास रही होगी ।

उसके गले में विचित्र किस्म की एक माला थी जो संभवतः हड्डियों से बनी हुई थी और उस अंधेरे में भी सफेद रंग से चमक रही थी ।

वह लगभग 5 फुट ऊंचा रहा होगा ।

वह दुबले-पतले बदन का स्वामी था !

लेकिन.....

उसके कंधे पर एक जंगली सूअर लटका हुआ था, जो काफी हट्टा कट्टा था । जिससे पता चल रहा था कि वह काफी ताकतवर इंसान है ।

उसने उनकी भाषा मे कुछ कहा ।

और मेरी तरफ इशारा किया ।

उसके इशारे पर उन लोगों ने मुझे खोल दिया ।

यह मेरे लिए मौत के मुंह से बाहर निकलने जैसा था और वह व्यक्ति मुझे किसी देवदूत जैसा लग रहा था ।

मैं चबूतरे से बाहर कूदी और घबरा कर उससे जाकर लिपट गई ।

उसने मुझे अपने से परे धकेल दिया और उस जंगली सूअर को लेकर चबूतरे की ओर चला गया ।

चबूतरे पर ले जाने के बाद उस सूअर की बलि दी गई । उसके बाद लगभग आधे घंटे तक अजीब अजीब से मंत्रों के साथ पूजा चली । लगभग 1 घंटे तक उनका नृत्य चला जिसमें उस व्यक्ति ने भी भाग लिया ।

मैं एक तरफ बैठकर डर से कांपती हुई यह सब देखती रही ।
यह व्यक्ति नहीं आता तो उस सूअर की जगह पर मुझे होना चाहिए था !
यह सोचती हुई मैं बैठी हुई थी .....

उसके बाद लगभग हफ्ते भर में उन्हीं आदिवासियों के साथ रही ।
भाषा की दिक्कत थी ।

ना उनको मेरी भाषा आती थी !
ना मुझे उनकी भाषा आती थी !!
इसलिए सब कुछ इशारों में ही संपन्न होता था ।

वे लोग जैसा जैसा करते मैं भी वैसा ही करती ।

वे लोग साधक थे और कुछ विशेष प्रकार की साधना संपन्न कर रहे थे । संभवतः वह व्यक्ति जो उस रात आया था इनका गुरु था ।

वो सारे आदिवासी उस देवी की मूर्ति के सामने रोज रात को लगभग तीन-चार घंटे एक स्वर में एक अजीब से मंत्र का जाप करते थे ।
मैं भी उनके साथ बैठकर उसका जाप करती रहती ।
या यूं कहिए कि सुनते सुनते मेरे मुंह से भी वही मंत्र की ध्वनि निकलने लगी थी ।

खुला इलाका था.....

जलप्रपात के पास की जगह थी इसलिए ठंड भी पर्याप्त थी , लेकिन जब सामूहिक मंत्र जाप होता था तो वातावरण में गर्मी सी छा जाती थी ।
ऐसा लगता था जैसे मंत्रों के प्रभाव से वह गर्मी पैदा हो गई हो ।

यह था मंत्रों के प्रभाव का मेरा पहला अनुभव !

सातवां दिन होते होते मुझे अपने सिर के ऊपरी हिस्से में ,,,,,,,,

जहां पर ब्रह्मरंध्र की उपस्थिति कही जाती है !

वह स्थान जो छोटे बच्चों के सर में हिलता हुआ दिखाई देता है और बिल्कुल मुलायम सा होता है वह स्थान ब्रह्मरंध्र कहलाता है ।

उस जगह पर मुझे स्पंदन का एहसास होने लगा था ।

उस समय ना तो मुझे कुंडलिनी के बारे में कोई ज्ञान था और ना ही चक्रों के बारे में । इसलिए मुझे यह पता नहीं चला कि वह वास्तव में सहस्त्रार चक्र में स्पंदन का लक्षण था ।

लगभग 8-9 दिन के बाद सुबह के समय वह व्यक्ति पुनः कबीले में दिखाई दिया ।

वह चबूतरे पर बैठ गया सारे लोग सामने जमीन पर बैठे । उसने कुछ बातें समझाई । शिष्यों ने भी उनसे काफी बातें की जिसमें से मुझे कुछ भी समझ नहीं आया ।

वह भी अपने स्थान से उठ खड़े हुए .....

उसके बाद सारे लोग उठकर जाने लगे ।

तभी उन्होंने कहा - नागवल्ली ! यू कम विद मी (तुम मेरे साथ आओ)

एक जंगली आदमी के मुंह से अंग्रेजी सुनना मेरे लिए आठवें आश्चर्य से कम नहीं था ।
वह भी मेरे नाम के साथ ।
इसके विषय में मैंने उनको कभी बताया भी नहीं था और ना ही उनके शिष्यों ने कभी मुझसे इस विषय पर बात की थी ।

इससे मुझे यह तो पता चल गया कि वह व्यक्ति एक सिद्ध पुरुष है ।

मैं किसी अज्ञात की आशंका के साथ कुछ झिझकती हुई उसकी तरफ आगे बढ़ गई ।
मेरे पहुंचने से पहले वह मुड़कर चल चुका था ।

मैं उसके पीछे पीछे जाने लगी ।

हम लोग घूम कर जलप्रपात के नीचे पहुंच चुके थे । जलप्रपात के अंदर एक छुपी हुई गुफा बनी थी । उसने मेरा हाथ पकड़ा और गुफा की तरफ ले कर जाने लगा ।

गुफा के अंदर घुसने के बाद उस व्यक्ति ने मुझे हाथ पकड़ कर रोक लिया ।

मुझे ऐसा लगा कि संभवतः इसे मैं पसंद आ गई होउँगी और यह मुझसे शारीरिक सुख प्राप्त करना चाहता होगा ।

जिस परिस्थिति में मैं खड़ी थी वहां पर ऐसी स्थिति में बचने की कोई संभावना नहीं थी .....

इसलिए उस अनिष्ट की आशंका से मेरा मन कांपने लगा ।

वह मेरे बिल्कुल करीब आ गया.....

इतने पास .....

कि उसके सांसो को मैं महसूस कर पा रही थी ।

मैंने अपनी आंखें बंद कर ली !

जैसे परिस्थिति के सामने आत्मसमर्पण कर दिया हो ।

उसके दोनों हाथ मेरे कंधे पर जम गए .....

फिर .....

उसने मुझे घुमा कर खड़ा कर दिया और अपने दोनों हाथों से मेरी दोनों आंखों को बंद कर दिया और उन्हें बड़ी जोर से दबाया ।

मुझे बड़े जोर की वेदना हुई ....
मेरी आंखों से आंसू भी छलक पड़े और मुंह से आह भी निकल पड़ी ।
उसने मेरी आंखों को दो-तीन बार मसला और छोड़ दिया ।

मैंने जो सोचा था .....
वैसा कुछ नहीं हुआ ।
इसलिए मुझे संभलने में थोड़ा सा समय लगा, फिर जब मैं ने आंखें खोली तो वह आगे बढ़ रहा था ।
मैं पुनः उसके पीछे पीछे बढी ।

आश्चर्य की बात यह थी कि आगे अंधेरा बढ़ता जा रहा था लेकिन मुझे सब कुछ वैसा ही दिखाई दे रहा था ।

संभवतः उसने आंखों में कोई ऐसी क्रिया की थी जिसकी वजह से मुझे अंधेरे में भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था.....

एक लंबा गलियारे जैसा था .....

जहां से गुजरते हुए हम लगभग तीन चार सौ मीटर अंदर आ गए होंगे ।

अब पानी के गिरने की आवाज काफी मध्यम ध्वनि में सुनाई दे रही थी ।

रोशनी का कोई माध्यम नहीं था ....

वह पूरी निश्चिंतता से चल रहा था .....
जैसे अंधेरे में सब दिख रहा हो और अब मुझे भी सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था ।
यह कुछ-कुछ नाइट विजन कैमरा के जैसा था । नाइट विजन कैमरा सुरक्षा एजेंसियों के द्वारा इस्तेमाल किया जाता है । जिसके माध्यम से रात में भी तस्वीरें खींची जा सकती हैं । कुछ प्राणियों में भी इस प्रकार की क्षमता होती है कि वह रात में देख सकते हैं । जैसे उल्लू ।

वहां से सीढ़ियां नीचे की तरफ जा रही थी ।
जो संख्या में लगभग 30-40 रही होंगी ।
हम लोग तकरीबन 25 या 30 फीट नीचे उतरे होंगे ।

वहां एक और गुफा थी ।
जिसके बीचो बीच एक त्रिकोण आकार का अग्निकुंड भी बना हुआ था । उस अग्निकुंड में पड़ी हुई राख से ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे वहां कुछ समय पहले हवन हुआ हो । उसके सामने एक मृग चर्म बिछा हुआ था ।

तांत्रिक साधना में मृग चर्म के आसन को अति विशिष्ट योगी प्रयुक्त करते हैं । इस प्रकार के आसन में बैठकर साधना करना अत्यंत दुर्लभ और विशिष्ट बात होती है ।

पहले मृग चर्म आसानी से उपलब्ध हो जाते थे लेकिन अब वन्य प्राणियों के शिकार पर सरकार के द्वारा प्रतिबंध लगाया गया है । इसलिए इस प्रकार के चर्म का क्रय विक्रय और उसे अपने पास रखना दोनों ही गैरकानूनी हो गया है । इन कारणों से अब मृग चर्म प्राप्त करना लगभग असंभव है ।

वह उस आसन पर जाकर बैठ गया और मुझे भी बैठने का इशारा किया ।
मैं उसके सामने बैठ गई ।

उसने अंग्रेजी में बोलना प्रारंभ किया - नागवल्ली ! मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा था लेकिन तुमने काफी देर कर दी ।

मुझे समझ में नहीं आया कि यह क्या बोल रहा है ।

मुझे अंग्रेजी और तेलुगु दो भाषाएं आती थी । आदिवासियों के द्वारा कही जाने वाली कोई भी बात मुझे समझ में नहीं आई थी लेकिन जब उस व्यक्ति ने अंग्रेजी में कहना चालू किया तो बात मेरी समझ में आने लगी थी ।

मुझे यह समझ में नहीं आया कि यह मेरी प्रतीक्षा कैसे कर रहा था और इसे कैसे मालूम कि मैं यहां आने वाली हूं ।

मेरे मन में आने वाले भाव को शायद वह भांप गया । उसने कहा - नागवल्ली ! साधना के क्षेत्र में बहुत सारी बातें पहले से निश्चित होती हैं । जो सही समय आने पर घटित होती हैं । जो साधक होते हैं । उनको महामाया की कृपा से आने वाली घटनाओं का आभास हो जाता

है । मुझ अकिंचन पर भी भगवती की कृपा है । जिसकी वजह से मैं कभी कभी ऐसा आभास प्राप्त कर लेता हूं । इसलिए मुझे पता था कि तुम आने वाली हो ।

यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ और थोड़ा अविश्वास भी.....
क्योंकि.....
इस प्रकार की बातें मैंने फिल्मों में देखी थी लेकिन वास्तविक जीवन में देखने का यह पहला अवसर था । उसे भी मेरे अविश्वास का पता चल गया था ।

उसने मेरे जन्म से लेकर अभी तक की बहुत सारी गोपनीय घटनाओं को मेरे सामने दोहरा दिया !
जिसे सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गई, क्योंकि उनके बारे में मेरे अलावा कोई नहीं जानता था ।

अंधेरे में देखने की क्षमता के प्राप्त हो जाने के बाद मुझे यह तो पता चल गया था कि यह व्यक्ति सिद्ध पुरुष है !
इस प्रकार से अतीत की जानकारी देने से वह विश्वास और पुख्ता हो गया ।

मैंने हिम्मत करके उससे पूछा - आप कौन हो और यहां कैसे आए ?

उसने बताना प्रारंभ किया - मेरा नाम विजेंद्र है । मैं बिहार के एक गांव में पैदा हुआ था । अपनी प्रतिभा के बल पर अमेरिका की एक ख्याति प्राप्त यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर के पद तक पहुंचा । धन सम्मान सब कुछ था लेकिन मन में कुछ कमी सी महसूस होती थी ।

लगभग एक साल तक मैं वहां ओरेगॉन में ओशो के आश्रम में भी रहा ! वहां मुझे शांति का आभास अवश्य हुआ लेकिन वहां जाने के बाद मेरी असहजता और बढ़ गई ।

रात को जब मैं सोता था तो मुझे बनारस के घाट दिखाई देते थे और वहां एक दिव्य सन्यासी के दर्शन होते थे । जब ऐसा कई बार हुआ तो मुझे समझ में आया कि मेरा रास्ता बनारस से ही निकलेगा और मैं आश्रम छोड़कर भारत वापस आ गया । जब भारत वापस आया तो बनारस मे हिमालय के योगीराज चिन्मयानंद जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

उन्होंने मुझे दीक्षा प्रदान की ।

मुझे उन्होंने कंठकाल नाम दिया । उनके साथ कई स्थानों की यात्रा पर गया जिनमें से अधिकांश हिमालय के क्षेत्र में थे ।

हिमालय मुख्यतः तीन भागों में बटा हुआ है । उसका सबसे उच्च भाग वह है जो बर्फ से ढका हुआ है ।
दूसरा मध्य का भाग है जिसमें कश्मीर आदि आते हैं ।
तीसरा नीचे का भाग है उसमें टिहरी गढ़वाल जैसे क्षेत्र आते हैं ।

यात्रा के दौरान उस समय हम नैनीताल के पास एक छोटे से गांव में थे । एक दिन सुबह उन्होंने नीलकंठेश्वर महादेव के विषय में बताया । उन्होंने बताया कि वह एक अद्भुत मंदिर है । उसमें स्थित शिवलिंग इतना शक्तिशाली है कि उसके पास बैठने मात्र से व्यक्ति ध्यानस्थ अवस्था को प्राप्त हो जाता है ।
यह सुनकर मेरे मन में उस मंदिर को देखने का आग्रह पैदा हो गया । वह मेरी भावना को समझ गए और हम दोनों उस मंदिर की ओर चल पड़े ।

नैनीताल से रानीखेत होते हुए बद्रीनाथ जाने के लिए एक रास्ता है । जिसमें बीच में एक गांव आता है जिसका नाम है कौसानी । यह वही गांव है जिसमें सुप्रसिद्ध कवि पद्मभूषण सुमित्रानंदन पंत जी पैदा हुए थे ।
कौसानी से लगभग 6 किलोमीटर दूर नीलकंठेश्वर मंदिर [3]स्थित है ।
वहां चढ़ने के लिए लगभग ढाई किलोमीटर की लगभग खड़ी चढ़ाई को चढ़ना पड़ता था । जो लगभग दुर्गम कही जा सकती है उसी रास्ते पर चढ़ते हुए उस मंदिर तक पहुंचा जा सकता था । स्थानीय लोग उसे नीलावत कहते हैं ।

गुरुजी वहां के कुछ ग्रामीणों को जानते थे उन्होंने उनसे बातचीत करके पता किया तो पता चला कि कुछ ग्रामीण नीलकंठेश्वर जाने वाले हैं ।
वहां के लोग नीलकंठेश्वर में मनौती मांगते हैं और जब उनकी मनौती पूरी हो जाती है तो मंदिर दर्शन करने के लिए जाते हैं ।

वहां के रहवासी पहाड़ी लोग हैं और पहाड़ों पर चढ़ना उनकी आदत है उसके बावजूद उनके लिए भी वह थोड़ी कठिन चढ़ाई होती है इसलिए कम लोग ही उस मंदिर में दर्शन के लिए जाते हैं ।

हम कुल सात लोग हो गए ।
मैं गुरुजी और पाँच ग्रामीण !
हम सब एक साथ उस ओर चल पड़े ।
लगभग 3 किलोमीटर चलने के बाद गुरुजी काफी आगे निकल चुके थे और हम लोग पीछे पीछे चल रहे थे ।

कोई चार किलोमीटर चलने के बाद बर्फीला रास्ता चालू हो चुका था । वहां एक गोल रंग की बादामी रंग की चट्टान थी । जिसके पास पहुंचते ही अचानक मुझे गुस्सा आने लगा !
यह एकदम अस्वाभाविक सी बात थी !!

केवल मुझे ही नहीं उन पांचों ग्रामीणों को भी गुस्सा आने लगा !
हम सभी एक दूसरे के ऊपर क्रोधित होने लगे !

हमारी आपस में तीखी बहस होने लगी । यह सब कुछ अचानक हो रहा था ।

बहस बढ़ती जा रही थी ।

तभी उन्मे से दो लोगों ने मुझ पर थप्पड़ मारे और उनको मैंने भी वापस दो चार थप्पड़ जड़ दिए । इसी प्रकार लड़ते झगड़ते हम लोग आगे चलते रहे.....

लगभग आधा किलोमीटर चलने के बाद हम आपस में सभी एक दूसरे को दो-चार थप्पड़ मार चुके थे... और एक दूसरे के ऊपर क्रोधित हो रहे थे !

आधा किलोमीटर पार होते ही सभी शांत हो गए !

मैं सोचने लगा कि यह क्या हो रहा था .....

उन्होंने मुझे समझाया कि यहां यक्ष आपस में झगड़ा करते रहते हैं, इसलिए यहां जो भी आता है वह भी क्रोधित होकर झगड़ा करने लग जाता है ।

सुनने में यह बात बेहद अजीब थी ...

लेकिन मेरे साथ घटित हुई थी ।

जिसके विषय में बाद में गुरु जी ने भी बताया कि हां उस स्थान विशेष में ऐसा होता है ।
क्यों होता है ? यह एक रहस्य है ।
शिव लोक के रहस्य के विषय में कोई भी नहीं बता सकता ।

ग्रामीणों ने मुझे बताया कि उस स्थान पर हमेशा झगड़ा होता है और हम लोग उसके लिए तैयार रहते हैं ।
यदि कोई अकेला आ जाए तब भी उसे क्रोध आता है !
कुछ ना मिले तो अपने ही बाल नोचने लगता है !
या बर्फ के ढेरों को उठा कर इधर-उधर फेंक कर गुस्सा होता रहता है ।

उस क्षेत्र से बाहर निकल जाते ही सब कुछ पुनः सामान्य हो जाता है और आदमी भी सामान्य व्यवहार करने लगता है ।

जितने विचित्र भगवान शिव हैं उतनी ही उनकी लीलाएं और उनके शिव क्षेत्र में घटित होने वाली घटनाएं भी होती हैं ।

खैर.....

हम सभी मंदिर तक पहुंच गए !

मंदिर में बाहर से दर्शन करके ग्रामीण लौट गए । उनकी मान्यता है कि जो मंदिर के अंदर जाता है, उसे भक्षण कर लिया जाता है ! वह मर जाता है । इसलिए वह मंदिर के अंदर नहीं जाते ।

गुरु जी पहले भी मंदिर के अंदर जा चुके थे , इसलिए उनके विषय में उन्होंने कुछ नहीं कहा लेकिन मुझे अवश्य कहा कि मंदिर में जाने से वापस आने की संभावना कम हो जाती है ।

मैं तो गुरु जी के साथ था इसलिए मुझे किसी प्रकार का डर नहीं था फिर भी मन में थोड़ा संकोच का भाव अवश्य आया !

फिर भी साहस करके मैं भी मंदिर के अंदर प्रवेश कर गया ।

मंदिर के अंदर लगभग 15 फीट ऊंचा शिवलिंग बना हुआ था .....

जो बर्फ का बना था ।

सबसे विचित्र बात यह थी कि वह शिवलिंग पूरी तरह से नीले रंग का बना हुआ था ।

आसपास जो बर्फ पड़ी थी वह सारी की सारी सफेद रंग की थी !

लेकिन.....

वह शिवलिंग बिल्कुल नीले रंग के बर्फ से बना हुआ था ।

ठंड बहुत थी ।

गुरुजी वहीं पर आसन लगाकर बैठ गए और मुझे भी बैठने का इशारा किया । वे बैठ कर ध्यानस्थ हो चुके थे.....

मैं भी वहां पर आसन लगाकर बैठ गया !

आंखें बंद करते ही मुझे वहां पर कुछ आवाजें सुनाई देने लगी.....

थोड़ा ध्यान से सुनने पर पता चला कि यह तो दशानन रावण के द्वारा रचित शिव तांडव स्तोत्र का उच्चारण चल रहा है .....

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले,

गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।

डमड्डुमड्डुमड्डुमन्निनादवड्डुमर्वयं, चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवो शिवम् ॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरी, विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके, किशोरचंद्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं ममं ॥.....

कुछ समय बाद अन्य मंत्र ध्वनियाँ भी सुनाई देनी प्रारंभ हो गई है ।
ऐसा लग रहा था जैसे कोई मंद स्वर में शिव मंत्रों का उच्चारण कर रहा हो .....

या वे ध्वनियाँ स्वत: उस शिवलिंग से उद्भूत होकर वातावरण में फैल रही हो .....

कुछ समय बैठने के बाद मेरा ध्यान लगने लगा ।
ध्यानस्थ अवस्था में मुझे भगवान शिव के साक्षात दर्शन प्राप्त हुए ।

जटाजूट धारी .....

दिगम्बर .....

त्रिशूलधारी .....

शक्ति सहित .....

अपने नेत्रों से करुणा की वर्षा करते हुए देवाधिदेव महादेव भगवान शिव !!!!

उस समय तक शाम ढलने लगी थी और सारे ग्रामीण वापस जा चुके थे । वहां मेरे और गुरु जी के अलावा कोई नहीं था ।

उस नीले शिवलिंग का आभामंडल और उस गुफा की दिव्यता सब कुछ किसी स्वप्न से कम नहीं थी ।

वहां बैठे रहने से ही ऐसा अनुभूत होता था जैसे बस बैठे ही रहो ...

धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता जा रहा था शाम के शायद 7:30 बजे होंगे ।

गुरुजी ने मुझे एक मंत्र दिया और उसका जाप करने का निर्देश भी .....

उसके बाद वे भी अपना मंत्र जाप करने लगे ।

रात भर मेरा मंत्र जाप चलता रहा पूरी रात मुझे चित्र विचित्र अनुभव होते रहे ।

सूर्योदय का समय निकट आने वाला था ।
हल्की हल्की रोशनी दूर कहीं से दिखाई देने लगी थी ।
गुरुजी उठे और मैं भी अपने आसन से उठा ।
हम दोनों गुफा के दूसरी तरफ निकले ....

इसके विषय में ग्रामीणों ने बताया था कि अगर कोई भी उस गुफा से बाहर निकल जाए अर्थात दूसरी तरफ निकल जाए तो फिर वह वापस नहीं आता है ।

इस प्रकार की किंवदंतीया हमारे कई मंदिरों में मौजूद हैं ।
बहुत सारे लोग इसे मानते हैं और इसका अनुपालन भी करते हैं, इस प्रकार से वह एक परंपरा में आ गया है ।

दक्षिण भारत में एक और मंदिर मैंने देखा है । जिसके अंदर एक विशालकाय भगवान विष्णु की मूर्ति है, जो कि शयन अवस्था में है । उस मूर्ति के बाद समुद्र प्रारंभ हो जाता है ।

उस मूर्ति को पार करने का निषेध है ।
उस मूर्ति के पार जाने वाला कोई व्यक्ति आज तक वापस नहीं आया
ऐसा कहा जाता है .....
बाकी सत्य क्या है यह तो प्रभु ही जाने....
खैर .....

थोड़ी हिचक के साथ में गुरु जी के साथ गुफा के उस पार निकल गया ।
गुफा के उस पार जो दृश्य मैंने देखा उसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकता ।

प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत होता है !
प्रकृति की संरचनाएं मन को अभिभूत कर देती हैं !!
यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि क्या इससे मनमोहक !
इससे विलक्षण !!
कुछ और हो सकता है ।

वहां पर एक बड़ा सा ताल बना हुआ था, जो लगभग 100 मीटर के दायरे में फैला होगा ।

चारों तरफ ऊंचे ऊंचे पहाड़ और उसके बीच में वह अद्भुत तालाब बना हुआ था ।

उसका पानी एकदम निर्मल था ।

साफ !

बिल्कुल किसी कांच की तरह !

इतना साफ कि उसके नीचे जो कुछ भी था.....

वह साफ दिखाई दे रहा था ।

उस समय उसमें कम से कम 8 से 10 फीट पानी रहा होगा ।

उस तालाब के अंदर खिले हुए थे कमल !

ऐसे कमल मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखे थे ।

वह बिल्कुल बर्फ की तरह सफेद रंग के थे !

बेहद सुंदर !

बेहद आकर्षक !!

बेहद अद्भुत !!!

सबसे विचित्र बात यह थी कि उसका आकार बहुत बड़ा था ।

इतना बड़ा जैसा हम सोच भी नहीं सकते !

वह फूल लगभग दो से तीन फीट के व्यास में खिले हुए थे ।
तालाब का एक बड़ा हिस्सा उन कमलों से भरा हुआ था ।

गुरुजी ने बताया - यह ब्रह्मकमल है । ब्रह्म कमल की सारी प्रजातियां ऊंची पहाड़ी और बर्फीली जगहों पर ही पाई जाती है । सामान्यतः जो ब्रह्मकमल पाए जाते हैं वह इतने बड़े आकार के नहीं होते । यह शिव क्षेत्र है ! इसलिए ब्रह्मकमल भी इतने असामान्य और अद्भुत आकार के हैं !

वास्तव में वे इतने खूबसूरत लग रहे थे कि मेरी इच्छा हो रही थी कि एक मैं तोड़ लूँ .....
और अपने साथ यादगार के रूप में ले आऊँ !

लेकिन.....
गुरु जी ने मना कर दिया ।
उन्होंने कहा कि उस ताल के पुष्प को तोड़ना मना है ।

वह दृश्य बेहद अद्भुत था !

बिल्कुल स्फटिक की तरह स्पष्ट और निर्मल जल से भरा हुआ हुआ तालाब !
उसमें खिले हुए वे अद्भुत !
सुंदर !
बड़े-बड़े ब्रह्म कमल !!
भगवान आदित्य नारायण की स्निग्ध रश्मियां जब ताल के पानी को स्पर्श कर रही थी तो वह दृश्य ऐसा था ....
जिसके सौंदर्य का वर्णन व्याख्या से परे है !
जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता !!

उनको देखकर अपने जीवन को तृप्त महसूस करता हुआ मैं वहीं बैठा हुआ था । आधा घंटे के लिए मेरी स्थिति लगभग वैसी ही हो गई जैसे किसी अप्रत्याशित और अद्भुत घटना के घट जाने के बाद किसी व्यक्ति की हो जाती है ।

वह दृश्य आज भी जब मैं याद करता हूं तो शरीर में रोमांच भर जाता है.....
फिर से उस स्थान पर पहुंच जाने की इच्छा होती है !
लेकिन .....

भगवान शिव की इच्छा के बिना उस स्थान पर जा भी नहीं सकते ।

उसके बाद मैं लगभग 2 साल तक गुरुजी के साथ अलग-अलग स्थानों पर गया .....
उन्होंने मुझे अनेक प्रकार की साधना सिखाई .... अंत में उन्हीं के निर्देश पर मैं बस्तर में आकर अपनी साधना पूरी करने लगा ।

गुरुमाता ने कहा - यह सब मुझे किसी फिल्मी पटकथा की तरह लग रहा था । लेकिन मैं शांत होकर सुन रही थी ।

कंठकाल जी आगे बोले - मेरा यहां से जाने का समय हो गया है । मेरे जाने के बाद इस क्षेत्र में तंत्र साधनाओं का ज्ञान देने वाला एक गुरु होना चाहिए ।

गुरुमाता - आपका आशय मैं समझ नहीं पाई ।

कालकण्ठ ने स्पष्ट किया - भारत में अनेक तंत्र क्षेत्र हैं । उसमें से एक तंत्र क्षेत्र यह भी है । यहां कोई ना कोई गुरु

तंत्र साधना का ज्ञान बांटने के लिए और नए साधकों के निर्माण के लिए सतत प्रयत्नशील रहा है ।

सनातन धर्म की धारा हजारों वर्षों से निरंतर चली आ रही है । उसकी विभिन्न शाखाएं अलग-अलग समय पर विकसित होकर पुनः उसी में विलीन हो जाती है ।

सनातन धर्म भगवान शिव के द्वारा उद्भुत है इसलिए इसका ना कोई आदि है ना कोई अंत ।

इस परंपरा को निरंतर प्रवाहशील बनाए रखने के लिए विभिन्न तंत्र क्षेत्रों में स्थापित सिद्ध पीठ में कोई न कोई गुरु हमेशा उपस्थित रहता है, जो नए साधकों को मार्गदर्शन प्रदान करता है और उन्हें आगे बढ़ाता रहता है ।

इन सब का नियंत्रण भगवान शिव के कैलाश पर्वत के पास स्थित एक अद्भुत आश्रम से होता है । वही निरंतर इन सिद्ध पीठों का संचालन और अनुकूलन करता रहता है ।

जो आध्यात्मिक शक्ति संपन्न साधक होते हैं या आध्यात्मिक रूप से लगातार प्रयत्नशील रहते हैं अर्थात मंत्र जाप साधना या ध्यान करते रहते हैं । उनको इस प्रकार के गुरु खोज लेते हैं और उन्हें आगे का मार्ग दिखाते रहते हैं । हां ! इसके लिए मन में शुद्ध भाव होना जरूरी होता है ।

गुरुमाता बोली - उसके बाद साल भर तक उन्होंने मुझे साधनाएं सिखाई । उनमें से कुछ साधनाएं ऐसी हैं जो अत्यंत उच्च कोटि की मानी जाती है । इसमें से एक है शून्य सिद्धि !

यह एक ऐसी साधना है जिसमें शून्य से किसी भी वस्तु को प्राप्त किया जा सकता है । यह एक अत्यंत रहस्यमय और विशिष्ट सिद्धि है । इसे एक प्रकार से पदार्थ निर्माण की कला समझ सकते हैं । किसी भी आवश्यक वस्तु को चाहे वह किसी भी आकार की हो उसे प्रकट कर देना संभव होता है ।

यह सुनकर मुझे अद्भुत लगा !
थोड़ा अविश्वास भी हुआ !!

संभवतः मेरे अविश्वास को गुरु माता भांप गई ।

उन्होंने अपने दाहिने हाथ को हवा में घुमाया ।
जब उसे खोला तो उसके अंदर एक छोटा सा रुद्राक्ष था । जिसे उन्होंने माधुरी की तरफ उछाल दिया । माधुरी ने उसे पकड़कर आंखों से लगाया और अपने पास रख लिया ।

इस तरह के चमत्कार सड़क पर बाजीगरी दिखाने वाले लोग भी दिखाते हैं । इतनी छोटी वस्तुएं कहीं छुपा कर निकाल लेना संभव होता है ।

मेरे मन में इस प्रकार के विचार आए ....
लेकिन मैंने संकोच वश उन्हें प्रकट करना उचित नहीं समझा ।
क्योंकि .....
वह माधुरी की गुरु माता थी !
इस नाते मेरे लिए भी सम्माननीय थी .....
कई बार हम सम्मान और आदर के चक्कर में कई चीजें पूछ नहीं पाते हैं । लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि जिस

गुरु के पास हम बैठे हैं उनसे विभिन्न प्रकार के प्रश्न करते रहना चाहिए ताकि सभी संशय दूर हो सके ।
प्राचीन काल में गुरुकुल में शिष्य इसीलिए रहते थे ताकि वे अपने सभी प्रकार के प्रश्नों को गुरु से पूछ कर उसका उत्तर प्राप्त कर सकें ।
वर्तमान समय में गुरु शिष्य से इतनी दूर हो गए हैं कि वह उनसे साल में एकाध बार मिलते हैं । उसमे भी आशीर्वाद के साथ मामला समाप्त हो जाता है । शिष्य को लगता है कि गुरु जी बड़ी दुर्लभता से मिलते हैं इसलिए बड़े सिद्ध है ।

गुरु यह सोचता है कि कम से कम समय में मिलूं ताकि सामने वाला प्रश्न ना कर सके और मेरा आभामंडल इसी प्रकार बना रहे ।

दोनों अपने-अपने भ्रम जाल को बनाए रखने में सक्षम होते हैं ।
ऐसी स्थिति में शिष्य का विकास होना थोड़ा सा मुश्किल है ।
पुट्टपर्थी नामक स्थान पर सत्य साईं बाबा नाम के एक संत हुए थे ।

लंबे लंबे घुँघरालू बाल वाले बाबा जो गेरुआ चोला पहनते थे .....

संभवतः आप लोगों ने भी उनकी फोटो देखी होगी । वे विभिन्न प्रकार के चमत्कार दिखाते थे ।

जिसमें से सबसे प्रसिद्ध था उनका भस्म उंगलियों के बीच से प्रकट करना ।

वह हवा मे अपना खाली हाथ लहराते थे !
उसके बाद जब शिष्य के खुले हाथ मे अपना हाथ दिखाते तो उसमे से भस्म गिरने लगती थी .....

इसके अलावा कभी-कभी वे हवा मे अपना खाली हाथ लहराते और सोने की चेन या ऐसी ही कोई चीज उनके हाथ मे आ जाती ।

संगीत और भजन चलता रहता था !
वे बैठे रहते थे !
उनके हाथ मे टॉवल या रुमाल जैसी चीजें रखी रहती थी । उनके सामने रखे हुए टेबल में भी टॉवल बिछा हुआ रहता था ।

इसी बीच कभी-कभी उनको उबकाई सी आती थी और उसके बाद उनके मुंह से शिवलिंग तथा रुद्राक्ष जैसी चीजें भी वे निकाला करते थे ।
शिवलिंग कभी पत्थर के होते और कभी कभी तो सोने जैसी धातु के भी होते थे .....

उनके भक्त इसे उनकी सिद्धि मानते हैं ।

कई लोग इसे बाजीगरी मानते हैं ।

इस संदर्भ में भी कई वीडियो गूगल पर उपलब्ध है ।
जिसको आप देख सकते हैं और स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि क्या सत्य है ।

कई गुरु ऐसे हैं जिन्होंने कोई एक साधना संपन्न की हुई है ....
या कभी उन्होंने कोई एक चमत्कार संपन्न किया हुआ है.....
उस के बल पर उनका अखाड़ा या शक्तिपीठ या आश्रम सालों से चला आ रहा है ।
वहाँ शिष्यों की बड़ी फौज है.....

लेकिन सिद्धि प्राप्त व्यक्तियों का अभाव है ।
अभी एक मेरे परिचित से मेरी चर्चा हुई । वह एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल पर एक बड़े अखाड़े में एक विख्यात गुरु के साथ रहते हैं और उनसे दीक्षा प्राप्त हैं ।

वह बड़े सरल और प्रैक्टिकल किस्म के आदमी हैं । इसलिए मैंने उनसे पूछ लिया कि आपने दीक्षा क्यों ली । उन्होंने बताया कि आज से 40 वर्ष पहले उस गुरु ने जमीन के अंदर समाधि लगाई थी । इसके अलावा उन्होंने पानी के अंदर भी समाधि लगाई थी । तब से उनका नाम सिद्ध पुरुषों की श्रेणी में लिया जाने लगा ।

चमत्कार को नमस्कार किया जाता है । अब आप खुद सोच सकते है कि जमीन के नीचे समाधि लेना या पानी के नीचे समाधि लेना सिद्धि हो सकती है लेकिन वह सिद्धि गृहस्थ के किस काम की ?
कौन सा गृहस्थ जमीन के नीचे या पानी के नीचे समाधि लेने का इच्छुक है ?
लेकिन चमत्कार किया था इसलिए उसी आधार पर गुरुत्व चलता रहता है ।

उन बाबा का आश्रम भी काफी लंबा चौड़ा है और उसमें शिष्यों की काफी फौज भी है ।

मैंने उनसे यह पूछा - गुरु जी के अलावा कोई और सिद्ध साधक वहां पर आपको दिखा क्या ?

उन्होंने कहा - आज तक मुझे नहीं दिखा । यहां तक कि उनके बेहद करीबी जो शिष्य हैं उनके पास भी किसी प्रकार की सिद्धियां नहीं है ।

इससे आप वास्तविक स्थिति को समझ सकते हैं । सभी लोग इस उम्मीद के साथ लगे हुए हैं कि हमको गुरु सिद्धि प्रदान कर देगा ।

यह स्थिति कमोबेश हर गुरु के साथ है ।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस एक सिद्ध पुरुष थे ।
जिनको महाकाली सिद्ध थी ।
वे बंगाल में रहते थे ।
उनके पास भी शिष्यों की अच्छी खासी फ़ौज थी ।
उसके बावजूद उनमें से केवल एक ही शिष्य नरेंद्र अति विशिष्ट सिद्धियों को प्राप्त कर सका....

जो आगे चलकर स्वामी विवेकानंद कहलाया ।

उनके प्रयासों से आज उनके गुरु के नाम से रामकृष्ण मिशन पूरे भारत में चल रहा है ।
उनका शिकागो में दिया हुआ भाषण सनातन धर्म को पुनर्स्थापित करने की प्रक्रिया का प्रारंभ माना जाता है ।

लेकिन.....
स्वामी विवेकानंद के अलावा उनके किसी और शिष्य के विषय में आम आदमी नहीं जानता ।

यह इस बात को साबित करने के लिए पर्याप्त है कि गुरु के पास सिद्धि होने से हर शिष्य को सिद्धि मिल जाएगी ऐसा नहीं है.....

जो योग्य होगा .....
उसे सिद्धि मिलेगी.....

जो योग्य नहीं होगा उसे नहीं मिलेगा ।
यह एक अकाट्य सत्य है ।

हर साधक को ध्यान रखना चाहिए कि कोई गुरु किसी अयोग्य शिष्य को सिद्धि प्रदान नहीं कर सकता ।

हमारे यहाँ गुरु के पुत्र को भी गुरु मानने की परंपरा है । पुत्र ने साधना की हो या ना की हो उसे गुरु मान लेते हैं । आप स्वयं सोचे कि जिसने स्वयं साधनाएं नहीं की है वह दूसरों को साधना कैसे बताएगा ?

जब तक शिष्य स्वयं कठिन परिश्रम ना करें ।
तब तक साधना के क्षेत्र में हो.....
या किसी भी क्षेत्र में .....
सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है ।

वास्तव में शिष्य भी आलसी होता है !
वह मेहनत करना नहीं चाहता !
उसकी इच्छा यह होती है कि कहीं से पका पकाया मिल जाए !
गुरु कृपा कर दे .....
और मेरा काम बन जाए !!

इस चक्कर में वह गुरु के चक्कर भी लगाता है और दान दक्षिणा भी करता रहता है ताकि गुरु प्रसन्न हो जाए और उसका काम बन जाए ।

यही खेल चल रहा है .....

गुरु आपकी चापलूसी कर रहा है ।
गुरु आप को महान बता रहा है ।
तो समझ जाइए कि मामला गड़बड़ है .....

वास्तविक गुरु अपने शिष्य को बहुत ठोक पीटकर योग्य बनाता है ।
वह उसे जटिल परिस्थितियों में रखता है ।
उसकी मानसिक स्थिति को मजबूत करता है ताकि वह हर परिस्थिति का मुकाबला करने का साहस और क्षमता प्राप्त कर लें ।
उसके बाद धीरे-धीरे उसे साधनात्मक प्रबलता प्रदान करता है ।

इसमें कई वर्ष लग जाते हैं.....
बहुत सारे लोग छोड़ कर भाग जाते हैं ।

जो बच जाते हैं , उनको साधना के ऐसे मोती मिलते हैं कि वे ही नहीं बल्कि उनकी आने वाली पीढ़ियां भी तर जाती है ।
हाँ ! यह समय साध्य प्रक्रिया है !!!

अस्तु .....

गुरुमाता द्वारा रुद्राक्ष प्रकट करने से मेरे मन मे विचार आया कि छोटी छोटी चीजें तो प्रकट की जा सकती हैं, क्योंकि उन्हें कहीं छुपाया जा सकता है ।

क्या वास्तव में इससे बड़ी चीजों को भी प्रकट किया जा सकता है ?

मेरे मन में जब इस प्रकार का विचार आया तो मेरे विचार को गुरु माता ने भी पकड़ लिया .....

वह मेरी तरफ देख कर मुस्कुराई.....
मैं थोड़ा संकुचित हुआ .....
क्योंकि मुझे लगा कि उन्होंने मेरी चोरी पकड़ ली ।

उन्होंने दोबारा हाथ हिलाया .....

उसके बाद जो प्रकट हुआ उसे देख कर मैं अपने आसन से पीछे हट गया ।

वह था एक हट्टा कट्टा पूरी आकृति का शेर .....
घूर कर मेरी तरफ देखता हुआ .....
वह धीरे धीरे चल कर मेरे पास तक आया ।

तब तक मैं थोड़ा सामान्य हो चुका था और यह समझ गया था कि यह गुरु माता का शेर है तो मुझे कुछ करेगा नहीं । फिर भी शेर शेर होता है उसको देखकर अच्छे अच्छों की हवा निकल जाती है । मेरी भी हालत बहुत अच्छी नहीं थी ।
वह चलता हुआ मेरे पास आया.....
वह अपना चेहरा मेरे चेहरे के ठीक पास तक लेकर आ गया.....
इतना करीब .....
कि मैं उसकी सांसों को अपने चेहरे पर महसूस कर सकता था !
फिर उसने अपनी जीभ निकाली और मेरे गाल को चाटा .....

उसके बाद वह एक चक्कर लगाकर झोपड़ी से बाहर निकल गया ।

एक साधक का जीवन किसी थ्रिलर फिल्म से कम नहीं होता ।
ऐसे ऐसे अनुभवों से गुजरना पड़ता है जिसे याद करके सालों बाद भी झुर झुरी आ जाए ।

वह शेर का चाटना !
उस क्षण को याद करना !!
आज भी मेरे पूरे शरीर में झुर्झुरी भर देता है .....

शेर का इस प्रकार प्रकट होना मेरे मन में उठ रहे ऊहापोह को समाप्त करने के लिए पर्याप्त से भी ज्यादा था ।
काफी देर तक इसी प्रकार की चर्चा चलती रही और उसके बाद हम सो गए ।
अगले दिन दोपहर को मैं घूमने के लिए निकला । थोड़ा आगे जाने पर एक मैदान जैसा इलाका था और वहां जो दृश्य मैंने देखा .....
वह अविश्वसनीय था ।

वहां लखमा आराम से जमीन पर लेटा हुआ था ।
संभवतः सो रहा था.....

उसके पास थे तीन सांप .....
विशालकाय !
बहुत मोटे मोटे !!

सामान्य सांपों की मोटाई लगभग 1 से लेकर 3 इंच तक होती है लेकिन वे सांप कम से कम 8 से 10 इंच मोटे थे ।

इतनी मोटाई के अजगर तो दिखाई देते हैं लेकिन फन वाले सांप नहीं दिखाई देते ।

दो सांप फन उठाए लखमा के अगल-बगल घूम रहे थे और एक फन काढकर उसके सर के पास बैठा हुआ था ।

ऐसा लग रहा था जैसे उसके चेहरे पर आ रही धूप को रोकने के लिए छाया कर रहा हो ।

मुझे देखकर उसने बड़े जोर की फुफकार मारी ।

मैंने अपने कदम वापस खींच लिए और वापस झोपड़ी की तरफ आ गया ।

मैं जब झोपड़ी के पास पहुंचा तो माधुरी दिखाई दी । मेरे चेहरे के भाव देखकर वह समझ गई कि कुछ असामान्य हुआ है .....

उसने मुझसे पूछा - क्या हुआ ?

मैंने मैदान में लेटे हुए लखमा और उन सांपो के बारे में बताया ।

माधुरी बोली - वे नागकन्याएं हैं । लखमा को तीन नागकन्या सिद्ध है जो हमेशा उसके आसपास रहती है । तुमने उन्हें ही देखा है ।

इच्छाधारी नाग के विषय में आपने फिल्मों में देखा होगा । जिसमें सर्प अचानक कन्या का रूप ले लेता है और हीरो के साथ उसका प्रेम रहता है । सबसे हिट हुई थी अभिनेत्री श्रीदेवी अभिनीत नागिन ! इसमे भी कमोबेश यही कहानी थी ।

माधुरी की बात सुनकर मुझे समझ आया कि वे तीनों नागकन्याएं लखमा को धूप से बचाने के लिए और उसे सुरक्षा देने के लिए उसके इर्द-गिर्द तैनात थे । ठीक वैसे ही जैसे कोई मनुष्य अपने परिजनों के लिए करता है ।

वह पूरा कबीला साधकों का था ।
सभी लोग अलग-अलग साधनाओं में लगे हुए थे । जो महिला कढ़ाई के अंदर बैठी थी !
वह देह सिद्धि कर रही थी ।
यह एक ऐसी सिद्धि होती है जिसमें शरीर पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हो जाता है और फिर उसके ऊपर गर्मी सर्दी आग पानी किसी भी चीज का असर नहीं होता ।
इस प्रकार की सिद्धियों के सहारे ही योगी हिमालय में बर्फीले पहाड़ों में रह लेते हैं !
जहां पर आम आदमी का कुछ घंटे जीवित रहना भी असंभव होता है । वहां पर वे लंगोट बांधकर घूम लेते हैं , लंबे समय तक साधनाएं कर लेते हैं .....
यह देह सिद्धि के माध्यम से ही संभव होता है ।

दोपहर में गुरु माता ने अपनी कथा को आगे बढ़ाया ।

उन्होंने बताया – काल कंठ जी ने मुझे अपना उत्तराधिकारी बनाया । यहां कई साधक ऐसे थे, जिनको कई प्रकार की साधनाएं सिद्ध थी । जो कालकंठ जी के साथ कई वर्षों से साधनाएं कर रहे थे । उनमें से कुछ लोग यह इच्छा भी रखते थे कि वह काल कंठ के उत्तराधिकारी होंगे, लेकिन उन्होंने मुझे उत्तराधिकारी के रूप में चुना ।

यह बात इतनी आसानी से स्वीकार होने वाली नहीं थी .....
इसलिए उन्होंने कबीले के साधकों के सामने मेरी साधनात्मक शक्ति और योग्यता को दिखाने के लिए कई प्रकार के परीक्षण और साधनाओं का प्रयोग किया । जिसके बाद सभी लोगों को विश्वास हुआ कि वास्तव में मैं उनकी उत्तराधिकारी बनने के योग्य हूं ।

जैसा कि मैंने आपको बताया मैं जिज्ञासु किस्म का प्राणी हूं । अपने साधनात्मक अनुभवों के विषय में जब कोई साधक बताता है तो उसे विस्तार से जानने में मेरी रुचि बहुत ज्यादा होती है । जब गुरु माता ने यह कहा तो मैंने उसे अनुरोध किया कि वे इसे थोड़ा विस्तार से

बताएं । उन्होंने मेरे अनुरोध को स्वीकार किया और अपनी साधना यात्रा के विषय में कुछ और प्रकाश डाला ।

गुरु माता बोली - सबसे पहले उन्होंने मुझे तारा साधना सिखाई । तारा साधना एक महाविद्या साधना है । भगवती जगदंबा के 10 तांत्रिक स्वरूप माने गए हैं । जिनको महाविद्या कहा जाता है । इनमें से दो कुल होते हैं । पहला होता है "श्री कुल" और दूसरा होता है "काली कुल" । महाविद्या तारा काली कुल की महाविद्या है । इनकी साधना बेहद विचित्र और अद्भुत होती है । तारा महाविद्या के विषय में कहा जाता है कि वह अत्यंत प्रचंड और गोपनीय महाविद्या है । इनकी साधना पद्धति अति विशिष्ट होती है ।

तिब्बत को साधना के क्षेत्र में बेहद आगे माना जाता है और वहां के लामा साधकों की प्रमुख आराध्य देवी के रूप में देवी तारा को ही स्वीकार किया जाता है । तांत्रिक ग्रंथों में महर्षि वशिष्ठ को भी देवी तारा का उपासक माना गया है ।

गुरुमाता ने इसके बाद एक प्रकरण बताया जिसके विषय में हम सभी लोग अच्छे से जानते हैं ।

वह बोली - जैसा कि तुम जानते हो महर्षि वशिष्ठ राजा दशरथ के कुल गुरु थे ! उनके राजगुरु थे । भगवान राम[4] के राज्य अभिषेक का मुहूर्त उन्होंने ही निकाला ।
अब आप कल्पना करें.....
एक राजगुरु ने राजकुमार के राज्य अभिषेक का मुहूर्त निकाला और उसी मुहूर्त में राजकुमार को वनवास पर जाना पड़ा.....

जब यह घटना घटित हुई तो महर्षि व्यास को अत्यंत ग्लानि और खेद हुआ । उन्हें लगा कि मैंने जो काल गणना की थी वह गलत हो गई । मैंने जिस राजकुमार को जिस विशिष्ट मुहूर्त मे राजा के रूप में प्रतिष्ठित करने का विचार किया था !
वह उसी मुहूर्त में सन्यास को कैसे प्राप्त हो गया ?
उसे वनवास कैसे मिल गया ?

उन्हे अपने ज्ञान और गणना दोनों की न्यूनता का आभास होने लगा !

उन्हें लगा कि कहीं ना कहीं कुछ कमी रह गई है । इस कमी के बारे में जानने के लिए वे आत्मचिंतन में लीन हो गए .....

वह निरंतर यह सोचने लगे कि वह कौन सी बात है ?

वह कौन सी न्यूनता है ?

जिसके कारण मेरी गणना इतनी बुरी तरह से विफल हुई.....

कथा है कि उन्हें ग्लानि के उन क्षणों में भगवती तारा की साधना का निर्देश प्राप्त हुआ । उन्होंने देवी तारा की साधना की और अपने जीवन में जो भी न्यूनता थी उसे पूर्ण किया ।

अब आप सोच सकते हैं कि भगवान राम के कुल गुरु भी अपनी पूर्णता को प्राप्त करने के लिए जिस महाविद्या की साधना करने को विवश हो गए थे, वह साधना कितनी अद्भुत और अद्वितीय होगी ।

यह एक ऐसी महाविद्या है, जो अपने साधक को उसकी गलतियों पर माफी प्रदान नहीं करती । जिन नियमों के

आधार पर यह साधना की जाती है । वह साधक को पूर्ण करनी ही होती है ।

हां !

जब साधक एक बार देवी की साधना में पूर्णत: संलग्न हो जाता है, समर्पण भाव मे आ जाता है तब वे उसे अपने संरक्षण मे ले लेती हैं ।

किसी मां की तरह.....

जो अपने शिशु को उंगली पकड़कर आगे लेकर चलती है, महाविद्या तारा उसी प्रकार से अपने साधक की उंगली पकड़कर अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर करती है !

उसे ऊंचाइयां प्रदान करती है !

उसे एक अद्भुत व्यक्तित्व प्रदान करती है !!

उसे पुरुष से महापुरुष बनने की यात्रा पर आगे बढ़ाती है ।

जब आप तारा साधना संपन्न कर लेते हैं तो उसके बाद अन्य साधनाओं का मार्ग आपके सामने खुलने लगता है ....

परिस्थितियां ऐसी बन जाती हैं कि आपको स्वयं विभिन्न प्रकार की साधनाओं के विषय में जानकारी मिलनी आरंभ हो जाती है.....

यही नहीं साधना के कई गोपनीय रहस्य और उनकी साधना विधियां भी आपको पता चलने लगती है !

साधना जगत में कई तांत्रिक वस्तुएं ऐसी हैं जो आपको साधना में आगे बढ़ने में कई प्रकार से सहायता करती हैं ।

इनमें से कुछ न कुछ वस्तुएं आपको तारा साधना के बाद अपने आप आकस्मिक ढंग से किसी न किसी माध्यम से अवश्य प्राप्त होंगी । वह तांत्रिक वस्तु आपको आपके लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक भी बनेगी और आपको उच्च कोटि की सफलता प्रदान कराने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाएगी .....

एक विचित्र बात यह भी है कि तारा जयंती राम नवमी के दिन ही पड़ती है ।

आप सीताराम में से देवी सीता के आखिरी और भगवान राम के प्रारंभ के अक्षर को निकाले तब भी तारा महाविद्या का नाम ही निकलता है .....

तारा का दो अर्थ है ...

पहला अर्थ है स्टार .....

आसमान मे स्थित आकाशीय चमकता पिंड !

जो स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित है ।

अपने प्रकाश से दूसरों को भी प्रकाश दे सकता है ।

हमारे सूर्य को भी स्टार कहा जाता है जो सारे सौरमंडल को प्रकाशित करता है ।

पृथ्वी का सारा जीवन उसी से संचालित है ।

दूसरा अर्थ है तार देने वाली या तारिणी !

यानि जो आपको इस भवसागर से , इस संसार रुपी समुद्र से पार लगा दे .....

दोनों अर्थ अपने आप मे अद्भुत हैं ! बाकी आप समझदार हैं .....

सामान्यत: देवी तारा की साधना रात्रि काल में की जाती है । शक्ति साधना रात्रि काल में ही की जाती है । नवरात्रि का महाविद्या साधनाओं में विशेष महत्व होता है .....

काल कंठ जी ने मुझे जो विधि बताई थी वह सामान्य विधियों से अलग थी ।

वह जेठ का महीना था ! जब उन्होंने मुझे यह साधना प्रदान की ।
यह साधना मुझे दोपहर को करनी थी !
वह भी ठीक दोपहर को .....

जेठ का महीना मई-जून के आसपास पड़ता है अर्थात जब सूरज अपनी पूरी प्रचंडता पर होता है ! वह महीना कहलाता है जेठ !!
जब पूरी धरती तपती है !!!
आसमान से आग बरसता हुआ प्रतीत होता है .....
जब लू चलती है ...

उस महीने में !
दिन के बारह बजे !
चट्टान के ऊपर बैठकर मंत्र जाप करना था ।
इसी से आप उस साधना की जटिलता का अंदाज लगा सकते हैं ।

इस प्रकार की साधना को करने से पहले देह सिद्धि साधना करना जरूरी होता है । जो कालकण्ठ जी ने मुझे करवाई थी । उस साधना के बल पर इस प्रकार की परिस्थिति में नियंत्रित रहना संभव हो पाता है ।

ऐसा नहीं है कि उससे शरीर को तकलीफ नहीं होती । शरीर को तकलीफ अवश्य होती है लेकिन आत्म नियंत्रण का अभ्यास हो जाता है .....

मैं उस भरी तपती हुई दोपहरी में चट्टान के ऊपर बैठकर 15 दिनों तक साधना करती रही । मुझे इस प्रकार से साधना में बैठा हुआ देखकर अन्य साधकों की समझ में आ गया कि यह महिला विशिष्ट है और उनके मन में मेरे प्रति धीरे-धीरे श्रद्धा का भाव भी आने लगा ।

किसी भी गुरु के प्रति अगर शिष्य में श्रद्धा का भाव ना हो तो वह उसके द्वारा बताए गए साधनाओं को और साधना विधियों को पूरी तरह से समझ भी नहीं सकता है और उसे विश्वास पूर्वक करने की कोशिश भी नहीं करेगा ।

इसलिए गुरु जो सक्षम होता है वह योग्य शिष्य के मिलने पर उसे अपनी साधना और शक्तियों का भी परिचय देता है ! उसका अनुभव कराता है !! ताकि वह गुरु को परखने में ज्यादा समय बेकार ना करके साधना के पथ पर गतिशील हो सके ।

कालकंठ जी के पास भी समय कम था ।
इसलिए उन्होंने मुझे इस जटिल साधना को प्रदान किया ।

तपती हुई चट्टान पर बैठना किसी तवे पर बैठने जैसा अनुभव होता है ।

यह दिगंबर साधना थी !
इसलिए नितंब की चमड़ी गर्मी की वजह से जलने जैसी महसूस होती थी !
उसके साथ वातावरण की गर्मी अलग ही बेचैनी पैदा करती थी ।
सर के ऊपर सूर्य भगवान की प्रचंड किरणों का प्रहार निरंतर चलता रहता था.....

लगभग आठ दिनों तक यही स्थिति रही और मैं दृढ़ निश्चय होकर मंत्र जाप में लगी रही ।
मुझे उस पत्थर पर बैठकर तारा मंत्र की 108 मालाएं संपूर्ण करनी होती थी और इसमें मुझे लगभग 4 से 5 घंटे का समय लगता था ।

सुबह साढ़े दस ग्यारह बजे के आसपास में अपने पथरीले आसन पर बैठ जाती और मंत्र जाप प्रारंभ कर देती !
तब तक वातावरण में पर्याप्त गर्मी आ चुकी होती थी और लगभग 30-35 डिग्री का टेंपरेचर आ जाता था !
इसके बाद गर्मी बढ़ती जाती थी.....
मेरा जाप उसी प्रकार से दोपहर लगभग तीन बजे तक चलता था ।

नौवे दिन से विचित्र किस्म का चमत्कार होने लगा !

जब मेरा मंत्र जाप प्रारंभ होता था तो हर तरफ धूप निकली होती थी .....
लेकिन.....

मंत्र जाप प्रारंभ होने के एक डेढ़ घंटे के बाद जब सूरज भगवान बिल्कुल मध्य आकाश में आने लगते थे .....
ठीक उसी समय.....
बादल का एक टुकड़ा उनके और मेरे बीच में पर्दे की तरह आ जाता था !
और वह तब तक बना रहता जब तक मेरा मंत्र जाप पूर्ण नहीं हो जाता ।

लगभग एक घंटे के मंत्र जाप के बाद मैं लगभग ध्यान की अवस्था में चली जाती थी और उसके बाद क्या होता था यह मुझे पता नहीं चलता था .....

मेरा मंत्र जाप चलता रहता ...
इस बीच में क्या घटित हो रहा है मुझे पता नहीं होता था ....
कबीले के सारे लोग उस विचित्र घटना को देख कर आश्चर्यचकित होते थे कि यह बादल इसके सर के ऊपर छांव देने के लिए क्यों आता है ?
एक-दो दिन उन्होंने इसे संयोग समझा !
जब रोज यह होने लगा तो उनको मेरे अंदर देवी शक्ति होने का विश्वास जमने लगा ।

मेरी पंद्रह दिन की साधना इस प्रकार से संपन्न हुई और मुझे अपने मानस पटल पर भगवती का साक्षात्कार भी प्राप्त हुआ .....

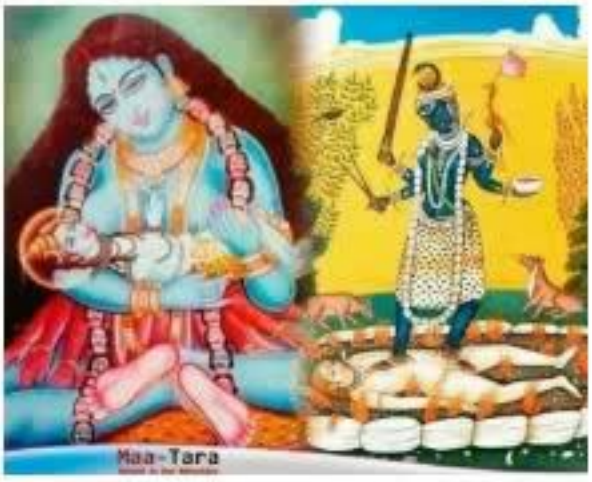

दिगंबरी....

खर्वा ....

लंबोदरी .....

श्याम वर्णी .....

महातारा !!!!

देवी के दिव्य दर्शन के बाद मेरा संपूर्ण शरीर आग से तपता हुआ प्रतीत होता था .....

मैं घंटों पानी में पड़ी रहती थी.....

यह स्थिति चार-पांच दिन के बाद सामान्य हुई ....

अगला परीक्षण और भी विचित्र था .....
मुझे इन सारे परीक्षणों से होकर गुजरना था तभी मुझे इस तंत्र पीठ के गुरु के पद पर आसीन किया जाना था ।

बरसात का मौसम आ चुका था !
वह मौसम जब सांप आसानी से आपको दिखाई देते हैं !
बाकी मौसम में सर्प इतनी सरलता से नहीं दिखते जितने बरसात में दिखाई देते हैं ।
अब इसका कारण क्या है यह एक अलग विषय है उस पर चर्चा फिर कभी....

सावन का महीना था !
शिव साधना का समय चल रहा था !
कबीले के सारे लोग उस समय शिव साधना में संलग्न थे ।
मैं भी उनके साथ दिन में शिव साधना करती और फिर रात में काल कंठ जी के द्वारा दिए गए एक विशेष पाशुपत मंत्र का जाप करती ।
छत्तीसगढ़ के बस्तर इलाके में सभी प्रकार के सांप पाए जाते हैं !

गहन वन से घिरा हुआ क्षेत्र होने के कारण जहरीले इंडियन कोबरा प्रजाति के सांप भी यहां बहुतायत में मिलते हैं , जिनको तक्षक कोबरा भी कहा जाता है ..... उस दिन मेरी झोपड़ी में सात सांप छोड़ दिए गए और सारे के सारे तक्षक कोबरा.....

मुझे इसके विषय में कोई जानकारी नहीं थी और मैं अपनी साधना में लीन थी .....
उस समय मैं जो साधना कर रही थी , उसमें आसन पर बैठना था और बाया पैर जमीन पर रखकर साधना करनी थी ।

अलग-अलग साधनाओं मे बैठने के लिए अलग प्रकार के आसन का प्रयोग होता है । उसी प्रकार से अलग-अलग मुद्राओं का भी विधान है । उस साधना में इस प्रकार की मुद्रा में बैठना था जैसे दक्षिणामूर्ति शिव बैठते हैं.....
एक पैर आसन के ऊपर और एक पैर नीचे जमीन पर.....

आश्चर्य की बात यह थी कि कुछ सर्प आकर मेरे पास चिपक गए .....

एक सर्प पांव में लिपट कर कुंडली बनाकर वही शांति से बैठ रहा ।

एक सर्प मेरे गले पर लिपट कर फन काढ़ कर मेरे सर के ऊपर आ गया और तीसरा सर्प मेरी कमर पर लिपटा हुआ था .....

मेरा मंत्र जाप जारी था .....

उसी परिस्थिति में मेरा मंत्र चलता रहा ।

लगभग एक घंटे तक यही स्थिति रही होगी !

मुझे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी ।

बाद में कबीले की एक महिला ने मुझे इस विषय में बताया ।

इस घटना से उनका विश्वास मेरे प्रति और बढ़ा लेकिन अंतिम परीक्षण बाकी था .....

यह संभवतः सबसे जानलेवा और खतरनाक परीक्षण था .....

जिसमें से होकर मुझे गुजरना था ।

इस परीक्षण के बारे में मुझे बता दिया गया था ।

हमने रामायण के प्रकरण में देवी सीता के अग्नि परीक्षण के विषय में सुना है । जिसमें भगवती को अग्नि में प्रवेश करके अपना परीक्षण देना पड़ा था और उसमें से भी वे सुरक्षित बाहर निकल आई थी ।

कुछ मिलती जुलती स्थिति यहां पर मेरे साथ भी थी । फर्क सिर्फ यह था कि मुझे अपनी देह सिद्धि की प्रामाणिकता का प्रमाण देना था ।
इसके लिए मुझे अपनी झोपड़ी के अंदर बैठकर देह सिद्धि मंत्रों का जाप करना था और उसके बाद मेरी झोपड़ी में आग लगा दी जाती ।

झोपड़ी के पूरा जल जाने के बाद भी अगर मैं सुरक्षित बच जाती तो उसका मतलब होता कि मेरा देह सिद्धि साधना का क्रम पूर्ण हो चुका है और मैं अब गुरु पद स्वीकार करने के योग्य हो चुकी हूं ।

एक क्षण के लिए मेरे मन मे विचार आया कि सब छोड़कर भाग जाऊं ।
यह तो जान बूझकर मौत को गले लगाने जैसा था ।
फिर अपने अनुभवों को याद किया तो लगा ....

“जब ओखली मे सर दिया तो मूसलों से क्या डरना” ।

वह भाद्रपद माह की अमावस्या की तिथि थी !
जब मेरा यह परीक्षण होने वाला था ।
मैं अपने झोपड़ी के अंदर पत्थर के बने हुए आसन पर बैठी हुई थी ।
मैंने गुरु को याद किया और उसके बाद देह सिद्धि मंत्र का जाप प्रारंभ कर दिया ।
जैसे जैसे देहसिद्धि मंत्रों का जाप आगे बढ़ता जा रहा था .....
मुझे अपने शरीर के कठोर होने का आभास हो रहा था.....
ऐसा लग रहा था जैसे कोई शक्ति मेरे शरीर को बांधकर सुरक्षित कर रही हो ।

लगभग आधे घंटे के मंत्र जाप के बाद बाबा काल कंठ ने मेरी झोपड़ी में आग लगाने का इशारा किया ।
उस समय लखमा के पिता जबंगा, कालखंड जी के प्रमुख शिष्य थे और उन्हें ऐसा लगता था कि वही उनके उत्तराधिकारी बनने के योग्य है !

मेरा इस प्रकार से बीच में आ जाना उनको उचित नहीं लग रहा था ।

लेकिन....

घट रहे घटनाओं को देखते हुए वह भी कुछ-कुछ इस बात के लिए राजी हो गए थे और इस अंतिम परीक्षण के द्वारा वह अपनी सारी शंकाओं का समाधान कर लेना चाहते थे !

बाबा कालकण्ठ ने झोपड़ी में आग लगाने का उत्तरदायित्व जबंगा को ही सौंपा था .....

उन्होंने झोपड़ी में आग लगा दी !

जैसा कि आप जानते होंगे कि झोपड़ी घाँस फूँस से बनी हुई होती है ।

सूखी हुई घाँस बहुत जल्दी जलती है ।

मेरी झोपड़ी ने भी आग पकड़ ली ।

आग की लपटें धीरे-धीरे तीव्र होती जा रही थी और उनकी ऊंचाई 10 फुट तक जा चुकी थी ।

धीरे-धीरे पूरी झोपड़ी जलकर राख हो गई.....

मेरे चारों तरफ आग के टुकड़े बिखरे पड़े थे !

उनके बीच में मैं स्थिर अवस्था में बैठी हुई थी .....

इस प्रकार से मैंने अपने आखिरी परीक्षण को भी पूरा कर लिया .....
जिसके बाद सारे साधकों ने मुझे अपने गुरु के रूप में स्वीकार कर लिया

लेकिन.....
लखमा के पिता जबंगा को अभी भी मुझ पर शक था । उसे ऐसा लग रहा था कि मैं उसका अधिकार छीन रही हूं और वह मुझसे ज्यादा योग्य है ।

इन सारी घटनाओं के बाद उसे यह पता चल गया था कि वह सीधे मुझसे टक्कर नहीं ले सकता । इसलिए उसने एक और उपाय अपनाया और मेरे खाने में एक जंगली जड़ी मिला दी ।
वह जडी इतनी खतरनाक थी कि उसका एक इंच का टुकड़ा भी शरीर में जाने पर निश्चित मृत्यु संभावित थी । उसने लगभग 6 इंच लंबी जड़ी मेरे भोजन में मिला दी थी और मेरे सामने उसे रखवा दिया था ।
भोजन क्योंकि तुम्बे में था इसलिए बाहर से कुछ भी दिखाई देने का सवाल ही नहीं था ।

तुम्बा मेरे सामने रखा हुआ था और मैं आंख बंद करके भोजन के पहले की जाने वाली प्रार्थना कर रही थी ।

तभी.....

प्रार्थना पूरी होते होते .....

अचानक उस तुम्बे से वह जड़ी निकल कर बाहर आने लगी ।

यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे प्राचीन काल में दिखाई जाने वाली इंडियन रोप ट्रिक हुआ करती थी ।

इसमें एक सांप को रखने वाला डब्बा होता है जिसके अंदर सांप की जगह में रस्सी रखी होती है ।

जैसे-जैसे जादूगर या बाजीगर मंत्र जाप या कुछ क्रिया करता है, वह रस्सी धीरे-धीरे सीधी खड़ी होकर ऊपर की ओर उठने लगती है ।

कुछ उच्च कोटि के बाजीगर तो अपने सहयोगी को या स्वयं इस रस्सी को पकड़ कर ऊपर चढ़ते थे ।

वे ऊपर चढ़ते चढ़ते शून्य में गायब हो जाते थे और कुछ समय बाद वापस भी प्रकट हो जाते थे । यह रस्सी इस प्रकार से खड़ी हुआ करती जैसे कोई सांप सीधा खड़ा हो गया हो ।

यह दृश्य देखने में बेहद अद्भुत और अविश्वसनीय होता है ।

ठीक वैसा ही मेरे सामने घटित हो रहा था ....

उस तुम्बे के अंदर से पिसी हुई जड़ी के स्थान पर साबुत जड़ी बाहर की तरफ निकल रही थी और ऊपर आ रही थी.....

धीरे धीरे वह 6 इंच लंबी जड़ी बाहर निकल कर आ गई और वह जड़ी अपने वास्तविक स्वरूप में तुम्बे में से निकल कर बाहर आ रही थी.....

धीरे-धीरे वह लखमा के पिता की ओर बढ़ने लगी .....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह उसे लक्ष्य करके आक्रमण करने के लिए जा रही हो .....

वह उसके सामने जाकर किसी सर्प की तरह खड़ी हो गई !

यह देख कर वह भी समर्पण की मुद्रा में आ गया । उसे समझ में आ गया कि मैं उससे साधनात्मक रूप से आगे हूँ ।

उसने सिर झुकाकर हाथ जोड़ दिए .....

जिसके बाद कालकण्ठ जी ने उसे वहीं रुकने का इशारा किया ।

वह जड़ी किसी आज्ञाकारी सेवक की तरह वहीं रुक गई ।

सारे लोग अपने अपने स्थान से हट चुके थे लेकिन जबंगा अपने स्थान से हट नहीं पा रहा था ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उस जड़ी ने उसे वहीं पर बांध दिया हो ।

मेरा मंत्र जाप होते तक लखमा का पिता जबंगा उसी आसन पर उसी प्रकार से बैठा रहा और उसके सामने वह जड़ी किसी सांप की तरह खड़ी रही ।

कालखंड ने मुझे इशारा किया और उसके बाद मैंने हाथ जोड़कर उस जड़ी को शांत हो जाने का निवेदन किया । अगर मैं उस जड़ी को शांत नहीं करती तो वह निश्चित रुप से जबंगा का प्राण लेने के लिए तत्पर थी । जैसे ही मैंने निवेदन किया वह जड़ी अपने आप जमीन पर गिर पड़ी .....

उसके बाद जबंगा भी मेरी चरणों में गिर गया ।

उसने भी स्वीकार कर लिया कि अब मैं गुरु बनने के योग्य हूँ ।

यह सारी घटना सुनकर मैं सोच में पड़ गया ।

वास्तव में किसी भी आश्रम या पीठ में गुरु बनने के लिए इस प्रकार की परंपरा होनी चाहिए कि पहले संबंधित व्यक्ति अपनी योग्यता को प्रमाणित करें ।

कई समाज और पंथ में पिता अगर गुरु है तो उसके 3 साल के बच्चे को या 5 साल के बच्चे को भी गुरु मान लिया जाता है !

जबकि उसने कोई योग्यता सिद्ध नहीं की होती ।
कई बार योग्य गुरु के नालायक पुत्रों को भी गुरु पद मिल जाता है.....

जिससे साधकों का कोई विशेष लाभ नहीं होता बल्कि साधना के प्रति उनका विश्वास धीरे-धीरे डगमगाने लगता है.....

अयोग्य गुरु अपने शिष्यों को आगे बढ़ने का मार्ग नहीं दिखा सकता क्योंकि वह स्वयं उस मार्ग पर नहीं चला है ।

जिसने स्वयं साधना नहीं की है वह दूसरों को कैसे साधना का मार्ग सिखा सकता है ।

इस प्रकार की परंपराओं ने सनातन धर्म का बहुत नुकसान किया है । वास्तविक गुरुओं को समझने की क्षमता धीरे-धीरे समाप्त होती चली गई है और फर्जी गुरुओं का बोलबाला हो गया है .....
महामाया की इच्छा वही जाने .....

गुरु माता आगे बोली - इस प्रकार के विचित्र परीक्षणों के बाद मुझे इस शक्तिपीठ का गुरु नियुक्त किया गया ।

उसके बाद कालकंठ जी के निर्देश पर विशेष चिता तैयार की गई । जबंगा तथा हम सभी को उन्होंने कई प्रकार के निर्देश दिए ।
कुछ विशेष योगिक क्रियाओं द्वारा उन्होंने अपने प्राणों को एकीभूत किया तथा ब्रह्म रंध्र के माध्यम से अपनी देह का त्याग कर दिया ।

उनके निर्देशानुसार उस देह का अंतिम संस्कार किया गया । उनकी चिता पर हम सबकी अंतिम साधन संपन्न हुई ।

जैसे ही कपाल मोचन सम्पन्न हुआ तभी मेरे ब्रह्मरंध्र पर एक प्रचंड आघात हुआ ।

वह आघात इतना प्रबल था कि मुझे अपना संपूर्ण अस्तित्व विखंडित होता हुआ लगा और मैं बेहोश हो गई .....

पूरे 7 दिन के बाद मुझे होश आया !

उस दौरान उनकी कई शक्तियां भी मेरे अंदर समाहित हो गई और मुझे कई सिद्धियां उस अंतिम साधना के फलस्वरूप अपने आप प्राप्त होने लगी .....

यह सारी घटनाएं बेहद रोमांचक और अविस्मरणीय थी ! जिनको सुनकर मैं साधना जगत के रहस्यों से रूबरू हो रहा था .....

गुरुमाता आगे बोली - अब कबीले के लोग मुझे गुरु के रूप में स्वीकार कर चुके थे ।

समय आगे बढ़ता जा रहा था और मेरी साधना भी साथ साथ आगे बढ़ रही थी .....

इसी क्रम में एक दिन ब्रह्म मुहूर्त में.....
जब मैं उसी जलप्रपात के भीतर बने हुए गुफा में बैठकर ध्यान में मग्न थी .....
एक वृद्ध सन्यासी के दर्शन हुए ।

उनके दर्शन प्राप्त होते ही मेरी आंखों से आंसू बहने लगे.....
निरंतर.....
ऐसा लग रहा था जैसे कोई बहुत दिनों से बिछड़ा हुआ मिल गया ।
यह स्थिति कुछ पांच दस मिनट तक रही होगी !

जब भी मैं ध्यान लगाती .....
मुझे उसी दिव्य सन्यासी के दर्शन होते ।
लगभग 6 फुट लंबी काया !
तांबई रंग और कंधों तक लंबे बाल , गर्दन तक लटकी हुई दाढ़ी !
सब बिल्कुल सफेद !!
आंखों से चमकता हुआ तेज .....
जैसे साक्षात सूर्य और चंद्र की तेजस्विता को आंखों में समा गई ।

अगले महीने भर तक यही स्थिति बनी रही !!

महीने भर के बाद ब्रह्म मुहूर्त में अपने साधना कक्ष में उस दिव्य सन्यासी की उपस्थिति महसूस हुई । मैंने आँखें खोल कर देखा तो सामने वह दिव्य सन्यासी उपस्थित थे ।
मैंने उनके चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम किया । मेरे आंखों से आंसुओं की धारा निकल कर उनके चरणों का प्रक्षालन कर रही थी ।
मेरे हृदय में भावनाओं की लहर जोर मार रही थी !
ऐसा लग रहा था जैसे मैं उन्हीं का अंश हूं !
जब वास्तविक गुरु के दर्शन होते हैं तो कुछ कुछ ऐसा ही आभास होता है .....

वह मेरे जन्म जन्मांतर के गुरु परमहंस विज्ञानानंद सरस्वती थे ।
काफी देर बात जब मैं संभली तो उन्होंने मुझे उठाया और मेरे सर पर हाथ फेरा ।
जैसे ही उन्होंने मेरे सर पर हाथ फेरा !

मुझे अपने पिछले जन्म की कथाएं किसी चलचित्र की भांति सामने से गुजरती हुई मानस पटल पर दिखाई देने लगी ।

किस प्रकार से मैं उनके साथ उनके आश्रम में साधनारत थी .....

किस प्रकार से पिछले कई जन्मों से मैं उनकी शिष्या रही हूं ।

उन्होंने मुझे कुछ विशेष दीक्षाएं प्रदान की और एक विशेष साधना के द्वारा अपने शरीर को लेकर किसी भी स्थान की यात्रा करने की एक विशिष्ट साधना पद्धति भी बताई ।

इकतालीस दिन की उस साधना को मैंने सफलतापूर्वक संपन्न किया ।

उसकी पूर्णता के दिन गुरुदेव फिर से मेरे साधना कक्ष में प्रकट हुए ।

उन्होंने मुझे सोमनाथ जाने का निर्देश दिया ।

गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करके मैं उसी दिन सोमनाथ के लिए रवाना हो गई .....

कैसे पहुंची ?

किस माध्यम से पहुंची ?
यह एक अलग विषय है ।
अगले दिन में सोमनाथ पहुँच चुकी थी ।

सनातन धर्म में पुराणों के अनुसार शिवजी जहाँ-जहाँ स्वयं प्रगट हुए उन स्थानों पर स्थित शिवलिंगों को ज्योतिर्लिंगों के रूप में पूजा जाता है।

भारत मे 12 ज्योतिर्लिंग माने जाते हैं । जिनके विषय मे श्लोक है :-

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम्॥1॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥2॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घृष्णेशं च शिवालये॥3॥

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥4॥

अर्थात :-

सौराष्ट्र प्रदेश (काठियावाड़) में श्री सोमनाथ, श्री शैल पर श्री मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी (उज्जैन) में श्री महाकाल, ॐकारेश्वर अथवा ममलेश्वर, परली में वैद्यनाथ, डाकिनी नामक स्थान में श्री भीमशंकर, सेतुबंध पर श्री रामेश्वर, दारुका वन में श्री नागेश्वर, वाराणसी (काशी) में श्री विश्वनाथ, गौतमी (गोदावरी) के तट पर श्री त्र्यम्बकेश्वर, हिमालय पर केदारखंड में श्री केदारनाथ और शिवालय में श्री घृष्णेश्वर।

जो मनुष्य प्रतिदिन प्रात:काल और संध्या के समय इन बारह ज्योतिर्लिंगों का नाम लेता है, उसके सात जन्मों का किया हुआ पाप इन लिंगों के स्मरण मात्र से मिट जाता है।

सोमनाथ मंदिर भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात के वेरावल के प्रभास पाटन में स्थित है।

इसे अत्यंत प्राचीन माना जाता है और चंद्रमा के द्वारा इसका निर्माण किए जाने की बात कही जाती है इस संबंध में एक कथा है जिसके अनुसार :-

दक्ष प्रजापति की 27 कन्याओं का विवाह चंद्रमा के साथ संपन्न हुआ था । इसमें रोहिणी नाम की पत्नी को चंद्रमा बहुत ज्यादा स्नेह करते थे । उनके अनुराग के कारण वे बाकी पत्नियों की उपेक्षा किया करते थे अर्थात उन्हें समय नहीं दिया करते थे ।

इस बात की शिकायत बाकी बहनों ने अपने पिता दक्ष प्रजापति से की । दक्ष ने चंद्रमा को समझाने का प्रयास किया ।
उसके बावजूद चंद्रमा का रोहिणी के प्रति स्नेह उसी प्रकार बना रहा और इस वजह से अन्य पत्नियों की उपेक्षा होती रही ।
जब बार-बार इस प्रकार की शिकायत मिलती रही और समझाने के बावजूद चंद्रमा के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया तो दक्ष क्रोधित हो गए और उन्होंने चंद्रमा को क्षय रोग से युक्त हो जाने का शाप दे दिया ।
इस शाप के कारण चंद्रमा का तेज जाता रहा और उनकी रोशनी समाप्त हो गई । इससे सारी प्रकृति में हलचल मच गई ।

सभी 12 ज्योतिर्लिंगों में यह प्रथम ज्योतिर्लिंग माना जाता है । इस वजह से यह अत्यंत ही विशिष्ट है ।

भगवान शिव के द्वारा इस स्थान पर चंद्रमा को आशीर्वाद दिए जाने के कारण इस क्षेत्र की तेजस्विता विशिष्ट हो गई है ।

इसलिए यह मंदिर प्राचीन काल से ही अत्यंत वैभवशाली रहा है । इस विषय में कई किंबदंतीया प्रसिद्ध है । जिसमें अनेक अद्भुत विवरण भी दिए जाते हैं । जिसके अनुसार यहां का शिवलिंग शून्य में लटका रहता था । ऐसे और भी कई अद्भुत रहस्य यहां पर विद्यमान है ।

जैसे यहां पर बना हुआ बाणस्तम्भ ।

इस मंदिर के दक्षिण में समुद्र के किनारे एक स्तंभ है। इसपर लिखा है कि “आसमुद्रांत दक्षिण ध्रुव पर्यंत अबाधितs ज्योतिर्मार्ग:।

उसके ऊपर एक तीर रखकर संकेत किया गया है कि सोमनाथ मंदिर और दक्षिण ध्रुव के बीच में अबाधित ज्योति मार्ग है अर्थात यहां से अगर ज्योति या प्रकाश

की किरण निकले तो वह दक्षिण ध्रुव तक बिना बाधा के पहुंच सकती है ।

इससे यह कहा जा सकता है कि उस समय के जो भी शिल्पी थे । जिन्हें हम आज इंजीनियर कहते हैं । उनको दक्षिण ध्रुव की जानकारी अवश्य थी । वह यह भी जानते थे कि पृथ्वी का आकार गोलाकार है ।

अब आते हैं कि क्या यह लिखी हुई बात सत्य है ?

यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है ।

खास तौर से इसलिए क्योंकि हम भारतीय हैं और हमें अपने सनातन धर्म की बातों पर विश्वास नहीं होता । हम उस में से अधिकांश बातों को कपोल कल्पित और हवाबाजी ही मानते हैं ।

उनको अवैज्ञानिक मानते हैं ।

इसमें हमारा दोष नहीं है क्योंकि हमें बचपन से वही सिखाया गया है .....

इस स्तंभ पर लिखी हुई बात का वैज्ञानिक प्रमाण हममें से हर किसी के पास मौजूद है । इसलिए आपको स्वत: अनुभव करके इसकी वास्तविकता का अंदाज हो जाएगा ।

की किरण निकले तो वह दक्षिण ध्रुव तक बिना बाधा के पहुंच सकती है ।

इससे यह कहा जा सकता है कि उस समय के जो भी शिल्पी थे । जिन्हें हम आज इंजीनियर कहते हैं । उनको दक्षिण ध्रुव की जानकारी अवश्य थी । वह यह भी जानते थे कि पृथ्वी का आकार गोलाकार है ।

अब आते हैं कि क्या यह लिखी हुई बात सत्य है ?

यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है ।

खास तौर से इसलिए क्योंकि हम भारतीय हैं और हमें अपने सनातन धर्म की बातों पर विश्वास नहीं होता । हम उस में से अधिकांश बातों को कपोल कल्पित और हवाबाजी ही मानते हैं ।

उनको अवैज्ञानिक मानते हैं ।

इसमें हमारा दोष नहीं है क्योंकि हमें बचपन से वही सिखाया गया है .....

इस स्तंभ पर लिखी हुई बात का वैज्ञानिक प्रमाण हममें से हर किसी के पास मौजूद है । इसलिए आपको स्वत: अनुभव करके इसकी वास्तविकता का अंदाज हो जाएगा ।

आज हम सभी के पास मोबाइल है और मोबाइल पर गूगल मैप्स है । उसमें आपको ग्लोब व्यू दिखाई देगा । यह गूगल मैप की वह सुविधा है जिसमें पृथ्वी के पूरे गोले को दिखाया जाता है और उसमें स्थित स्थानों की लोकेशन भी आपको दिखाई देती है । उसे खोल कर देख ले तो आपको सोमनाथ मंदिर की स्थिति दिखाई देगी ।
वहां से दक्षिणी ध्रुव तक का मार्ग भी आपको दिखाई देगा ....

सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि उस पूरे मार्ग पर समुद्र है !
किसी भूखंड का अस्तित्व दिखाई नहीं देता । अर्थात उस बाण स्तंभ पर लिखी हुई बात सौ टका सही है ।

यह स्तंभ काफी पुराना है । ज्ञात जानकारियों के अनुसार लगभग छठवीं सदी से इसका अस्तित्व है । यह उससे कई वर्षों पुराना हो सकता है लेकिन कम से कम इतना तो निश्चित है कि यह छठवी सदी या उससे पहले का है ।
अब .....

उस समय के सनातन धर्म के तथाकथित पिछड़े हुए लोगों को यह ज्ञान कैसे था ?
यह समझना बड़ा मुश्किल है .....

खैर .....
सोमनाथ का मंदिर बड़ा भव्य है !
उसके दर्शन करके हृदय प्रसन्न हो गया । मंदिर से दर्शन करके जब मै बाहर निकली तो वहां पर एक साधु खड़ा था । जिसने मुझे अपने साथ चलने का इशारा किया ।
मैं उसके साथ चल पड़ी !
मुझे वे समुद्र तट के पास के जंगल में बने हुए एक आश्रम मे लेकर गए ।
दोपहर का समय हो रहा था !
भोजन का समय था !
उस साधु ने मुझे भोजन ग्रहण करने का आग्रह किया ।
भूख मुझे भी लगी थी !
मैं पंगत में बैठ गई ।

मेरी पंगत के ठीक सामने एक और लाइन लगी थी । जिसमें एक साधु बैठा हुआ था । उसने कमर पर काले रंग का वस्त्र लपेटा हुआ था ।

उसकी आंखों से जब मेरी आंखें टकराई तो मेरी समझ में आ गया कि यह एक अद्भुत साधक है । उसकी आंखों से साधना का तेज टपक रहा था । उसका आभामंडल बेहद स्पष्ट और तेजस्विता से युक्त था । इस बात ने मेरे संदेह की पुष्टि कर दी थी । भोजन समाप्त हो जाने के बाद मैंने उसे खोजने की कोशिश की लेकिन वह दिखाई नहीं दिया ।

उसे खोजते हुए मैं आश्रम के बाहर तक आई तो वह वहीं पर खड़ा हुआ था ।

उसने कहा - चलो, नागवल्ली !

वह एक दिशा में आगे बढ़ गया !

मैं उसके पीछे पीछे चल पड़ी !

वह एक लगभग सुनसान पड़े शिव मंदिर में ले गया । वहां बैठकर उसने बताया कि उसका नाम चंड भैरव है । वह भी पूज्यपाद गुरुदेव का शिष्य है और उन्होंने निर्देशित किया है कि वह मुझे कुछ विशेष साधनाएं सिखाएं ।

लगभग 6 महीने तक मैं वहां पर रही । वह फक्कड़ साधु था । साधना का ज्ञान उसमें कूट-कूट कर भरा था और सिद्धियां तो जैसे उसके सामने नृत्य करती थी ।
वेद पुराण और उपनिषद जैसे अनेक ग्रंथ उसे कंठस्थ थे !
कंठस्थ भी ऐसे कि वह बकायदा उन श्लोकों के साथ उनकी व्याख्या भी संपन्न करता था !
ऐसी ऐसी बातें साधना के विषय में बताता था जो मैंने इसके पहले कभी किसी के मुंह से नहीं सुनी । उन छह महीनों में मेरी ट्रेनिंग किसी मिलिट्री ट्रेनिंग से कम नहीं थी । रहने की व्यवस्था एक अलग झोपड़ी में कर दी गई थी ।
सुबह ब्रह्म मुहूर्त में चार बजे मुझे तैयार होकर मंदिर में पहुंच जाना पड़ता था ।
मुझसे पहले वह वहां मौजूद रहता था ।
उसके बाद लगभग 1 घंटे तक अति विशिष्ट योगिक क्रियाएं और प्राणायाम करने के बाद साधना का दौर चलता जो दोपहर बारह बजे तक चलता था ।

उसके बाद दो-तीन घंटे का विश्राम रहता.....

गोधूलि बेला में फिर से साधना प्रारंभ होती जो पुनः अर्धरात्रि तक चलती रहती ।

इन 6 महीनों में न्यूनतम फलाहार लेकर मेरी साधना चलती रही । यह समय था श्री विद्या की साधना का !

श्री विद्या का मतलब होता है त्रिपुर सुंदरी अर्थात षोडशी महाविद्या !

इनका स्वरूप बेहद विचित्र है !

जिस प्रकार का इनका स्वरूप वर्णन किया जाता है उसमें यह भगवान शिव के नाभि कमल से उसी प्रकार से निकलती हुई दिखाई गई हैं जैसा विष्णु भगवान के नाभि स्थल से निकले हुए कमल में ब्रह्मा जी की स्थिति बताई जाती है ।

इन्हें प्रकाराँतर से राजराजेश्वरी विद्या भी कहा जाता है !

यह विद्या एक अत्यंत ही अद्भुत और गोपनीय विद्या है !

जिसका ज्ञान साधना के अत्यंत उच्च स्तर पर पहुंचने के बाद गुरु अपने शिष्य को प्रदान करता है ।
इस साधना के विषय में कहा गया है कि

श्री सुंदरी साधन तत्पराणाम
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव .....

अर्थात जो साधक श्री विद्या त्रिपुर सुंदरी की साधना में तत्पर होता है, उसके एक हाथ में संपूर्ण भोग, धन-धान्य, ऐश्वर्य, सुख सुविधा, सब कुछ होता है ।

इन सब के साथ उसके दूसरे हाथ में मोक्ष भी होता है । तात्पर्य यह है कि ऐसा साधक संपूर्ण भोगों का उपभोग करते हुए भी अपने सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ होता है ऐसी साधना केवल यही एकमात्र साधना है ।

मैंने श्री विद्या के विषय में सुना अवश्य था, लेकिन उनकी कृपा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था ।
इसलिए उनका विवरण सुनकर मन में विचार आया कि काश मैं भी यह साधना कर पाता.....

संभवतः माधुरी के हृदय में भी यही विचार आया होगा जिसे गुरु माता ने समझ लिया और उन्होंने कहा - क्या तुम दोनों श्री विद्या की साधना करना चाहोगे .....

हमारी स्थिति "अंधा क्या चाहे - दो आंखें" वाली थी । हम दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और सहमति में सिर हिलाया । जिसके बाद गुरु माता ने हम दोनों का हाथ पकड़ा और आंख बंद करने के लिए कहा । आंखें बंद करते ही उन्होंने कुछ मंत्रों का उच्चारण किया और उसके बाद शरीर को एक तेज झटका लगा !
फिर हमारा शरीर हवा में उड़ता चला गया !
जब हम जमीन पर उतरे तो वह समुद्र का तट था ।
सामने दिखाई दे रहा था वह भव्य मंदिर, जिसे सोमनाथ कहा जाता है !
बारह ज्योतिर्लिंगों में सर्वप्रथम होने का गौरव प्राप्त मंदिर !
जिसकी स्थापना भगवान चंद्र देव ने स्वयं की थी ऐसा माना जाता है ।
यहां के मंदिर के वैभव और समृद्धि को अलबरूनी ने भी अपने ग्रंथों में लिखा है .....

इस समृद्धि के कारण इस मंदिर पर लगातार आक्रमण होते रहे ....

मुगलों ने इसे कई बार लूटा और यहां पर भयानक नरसंहार भी किया गया ।

महमूद गजनबी के द्वारा किए गए आक्रमण के दौरान यह भी माना जाता है कि मंदिर परिसर में हजारों लोग मौजूद थे और उन सभी को पूजा करते हुए अवस्था में ही मार दिया गया था । इस लूट के लिए गजनी अपने 5000 साथियों के साथ आया था ।

हर बार इसे पुनर्स्थापित कर दिया जाता रहा ....

इस संबंध में विकिपीडिया में जो जानकारी मिलती है उसके अनुसार इसका पुनरुद्धार सरदार पटेल के द्वारा नेहरू जी के विरोध के बावजूद कराया गया था ।

विकीपीडिया[5] में लिखा है कि :-

सौराष्ट्र के पूर्व राजा दिग्विजय सिंह ने ८ मई १९५० को मंदिर की आधारशिला रखी तथा ११ मई १९५१ को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद ने मंदिर में ज्योतिर्लिंग स्थापित किया। नवीन सोमनाथ मंदिर १९६२ में पूर्ण निर्मित हो गया।

सोमनाथ मंदिर निर्माण में सरदार पटेल का बड़ा योगदान रहा।

जवाहरलाल नेहरू ने सोमनाथ मन्दिर के पुनर्निर्माण के प्रस्ताव का "हिन्दू पुनरुत्थानवाद" कहकर विरोध भी किया।

उस समय नेहरू से हुई बहस को कन्हैयालाल मुंशी ने अपनी पुस्तक "पिलग्रिमेज टू फ्रीडम" में दर्ज किया है। वे लिखते हैं-

... कैबिनेट की बैठक के अंत में जवाहरलाल ने मुझे बुलाकर कहा—मुझे सोमनाथ के पुनरुद्धार के लिए किया जा रहा आपका प्रयास पंसद नहीं आ रहा। यह हिंदू पुनरुत्थानवाद है। 'मैंने जवाब दिया कि मैं घर जाकर, जो कुछ भी घटित हुआ है उसके बारे में आपको जानकारी दूंगा।

... दिसम्बर 1922 में मैं उस भग्न मंदिर की तीर्थ यात्रा पर निकला। वहां पहुंचकर मैंने मंदिर में भयंकर दुरावस्था देखी—अपवित्र, जला हुआ और ध्वस्त !

पर फिर भी वह दृढ़ खड़ा था, मानो हमारे साथ की गई कृतघ्नता और अपमान को न भूलने का संदेश दे रहा हो ।

उस दिन सुबह जब मैंने पवित्र सभामण्डप की ओर कदम बढ़ाए तो मंदिर के खंभों के भग्नावशेषों और बिखरे पत्थरों को देखकर मेरे अन्दर अपमान की कैसी अग्निशिखा प्रज्जवलित हो उठी थी....
मैं बता नहीं सकता।

यह विवरण उस समय सोमनाथ मंदिर की दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करती है । मुझे लगता है कि सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण करने वाले आक्रांताओं द्वारा किए गए अत्याचार और मंदिर के विध्वंस की जानकारी पढ़ने पर हर सनातन धर्मी के हृदय में ऐसी ही ज्वाला भड़केगी ।

के.एम. मुंशी आगे लिखते हैं-
नवंबर 1947 के मध्य में सरदार प्रभास पाटन के दौरे पर थे । जहां उन्होंने मंदिर का दर्शन किया। एक सार्वजनिक सभा में सरदार ने घोषणा की: “नए साल के इस शुभ अवसर पर हमने फैसला किया है कि सोमनाथ

का पुनर्निर्माण करना चाहिए। सौराष्ट्र के लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देना होगा। यह एक पवित्र कार्य है जिसमें सभी को भाग लेना चाहिए।"

...कुछ लोगों ने प्राचीन मंदिर के भग्नावशेषों को प्राचीन स्मारक के रूप में संजोकर रखने का सुझाव दिया , जिन्हें मृत पत्थर जीवन्त स्वरूप की तुलना में अधिक प्राणवान लगते थे। लेकिन मेरा स्पष्ट मानना था कि सोमनाथ का मंदिर कोई प्राचीन स्मारक नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय के हृदय में स्थित पूजा स्थल था जिसका पुनर्निर्माण करने के लिए अखिल राष्ट्र प्रतिबद्ध था।

अब आप स्वयं सोचे कि जब देश का प्रधानमंत्री स्वयं विरोध में रहा हो तो किस प्रकार से उस मंदिर का निर्माण पुनः संपन्न किया गया होगा । यहां तक कि उनको राष्ट्रपति के मंदिर उद्घाटन के लिए जाने पर भी आपत्ति थी ।
इस विषय पर और जानकारी आप निम्नलिखित लिंक के माध्यम से देख सकते हैं ।

https://khabar.ndtv.com/news/india/rajendra-prasad-birthday-why-did-jawaharlal-nehru-asked-rajendra-prasad-not-to-go-to-somnath-temple-1956557

https://www.bhaskar.com/news/GUJ-AHM-OMC-infog-somnath-mandir-in-gujarat-was-opposed-by-jawaharlal-nehru-5758281-PHO.html

https://www.jansatta.com/national/when-jawaharlal-nehru-disapproved-rajendra-prasads-presence-at-somnath-temple-inauguration/1488503/

तमाम विरोध के बावजूद अंततः सोमनाथ मंदिर का पुनरुद्धार संपन्न किया गया और उसे वैभवशाली स्वरूप प्रदान किया गया ।

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाश माकाशवासं भजेहम् ॥

निराकार मोङ्कार मूलं तुरीयं ,
गिरिज्ञान गोतीत मीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं,
गुणागार संसारसारं नतो हम् ॥

तुषाराद्रि सङ्काश गौरं गम्भीरं,
मनोभूतकोटि प्रभा श्रीशरीरम् ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगाङ्गं,
लस्त्फालबालेन्दु भूषं महेशम् ॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं,
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम् ।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं,
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्
अखण्डम् अजं भानुकोटि प्रकाशम् ।
त्रयी शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेहं,

भवानीपतिं भावगम्यम् ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तरी,
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द सन्दोह मोहापकारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मधारी ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं,
भजन्तीह लोके परे वा नाराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं,
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवास ॥

नजानामि योगं जपं नैव पूजां
नतो हं सदा सर्वदा देव तुभ्यम् ।
जराजन्म दुःखौघतातप्यमानं
प्रभोपाहि अपन्नमीश प्रसीद! ॥

रुद्राष्टक का उच्चारण मैंने कई साधकों के मुंह से सुना है ,
लेकिन.....
जो दिव्यता.....

जो अलौकिकता.....

जो भाव प्रवाह.....

उस क्षण मैंने महसूस किया.....

वह सबसे अलग था !

ऐसा लग रहा था जैसे सारी प्रकृति मुग्ध होकर स्तुति का आनंद ले रही हो.....

आंखों से आंसूओं की धारा निकलने लगी !

ऐसा तभी होता है जब कोई गाना आपके हृदय के तारों को झंकृत कर जाता है !!

जब शब्दों का वह प्रवाह आपके कानों के माध्यम से आपकी आत्मा को स्पर्श कर लेता है !!!

कुछ वैसा ही अनुभव उन क्षणों में मुझे हुआ .....

उसके बाद लगभग महीने भर हम वहाँ रहे । गुरु माता हमें वहां छोड़कर वापस चली गई । गुरुदेव चंड भैरव जी ने हमें श्री विद्या साधना संपन्न करवाई ।

फक्कड़ साधु क्या होता है यह मैंने चंड भैरव जी से जाना ।

बहुत सारे लोग उनसे मिलने आते थे !

मिलने का समय तय था ।

दोपहर एक से तीन तक का समय ।
तब तक जो मंदिर परिसर में प्रवेश कर गया उन सब से वे मिल लेते थे .....
लेकिन.....
उसके बाद चाहे राजनेता आ जाए !
चाहे धन्ना सेठ आ जाए !
उसे वापस जाना ही पड़ता था ।

अगर प्रसन्न हो गए , मन हो गया , कृपा हो गई तो स्पर्श कर देने मात्र से असाध्य बीमारियां क्षण मात्र में दूर कर देते ।

क्रोध ऐसा कि अच्छा खासा व्यक्ति क्षण मात्र में बेहोश होकर गिर पड़े ।

कृपा करने पर आ जाए तो नंगे को राजा बना दे । क्रोध पर आ जाए तो राजा को भंगी बना दे ।
उन्हें देखकर मुझे ऋषि दुर्वासा का स्मरण हो आता था.....

एक विचित्र घटना का उल्लेख अवश्य करना चाहूंगा ।

हमारी प्रातः कालीन साधना संपन्न हो चुकी थी ।
दोपहर का लगभग 12-12:30 का समय रहा होगा ।
भोजन आदि से निवृत्त होकर बाबा अपने आसन पर बैठे थे और हम लोग कुछ दूरी पर बैठ कर सब कुछ देख रहे थे ।
एक बेहद गरीब लगने वाला व्यक्ति अपनी युवा पुत्री के साथ आया । दोनों के शरीर के कपड़े और उनकी शारीरिक अवस्था यह बताने के लिए पर्याप्त थी कि वे आर्थिक रूप से काफी कमजोर है ।
व्यक्ति की आयु कुछ 50-55 के आसपास रही होगी और युवती 18-19 साल की रही होगी ।
वे दोनों पास के ही गांव के रहने वाले थे और हफ्ते में एक दो बार अवश्य बाबा के दर्शन को आते थे ।
आते समय वे अपनी श्रद्धा और क्षमता के अनुसार कुछ न कुछ अवश्य लाते थे ।
कई बार उनके लाए गए सामान को देखकर आश्चर्य भी होता और दुख भी होता .....
क्योंकि....
उसमें भी उनकी आर्थिक विपन्नता का आभास होता था ।

जैसे एक केला !

कभी एक अमरूद.....

वह भी शायद उनके लिए काफी मुश्किल से मिलता रहा होगा .... ऐसा प्रतीत होता था ।

वे बड़े संकोच से उसे बाबा जी के पास भेंट चढ़ाते थे ।

उस दिन भी एक छोटा पका पपीता लेकर आए थे और उसे उन्होंने बाबा जी के चरणों में समर्पित कर दिया ।

बाबा उस दिन कुछ अलग ही मूड में थे उन्होंने युवती से पूछा - तू कुछ नहीं चढ़ाएगी ?

युवती को संभवत इस प्रकार के किसी प्रश्न की उम्मीद नहीं थी । उसके पास कुछ भी नहीं था यह उसकी भाव भंगिमा से स्पष्ट दिखाई दे रहा था ।

बाबा को किसी से कुछ मांगते हुए मैंने इसके पहले नहीं सुना था ।

इसलिए हम भी आश्चर्यचकित थे ।

वह युवति सोच में पड़ गई ....

बाबा ने दोबारा पूछा - चन्दा , तू कुछ नहीं चढ़ाएगी ?

तेरे पास कुछ नहीं है क्या ?

जैसे एक केला !

कभी एक अमरूद.....

वह भी शायद उनके लिए काफी मुश्किल से मिलता रहा होगा .... ऐसा प्रतीत होता था ।

वे बड़े संकोच से उसे बाबा जी के पास भेंट चढ़ाते थे ।

उस दिन भी एक छोटा पका पपीता लेकर आए थे और उसे उन्होंने बाबा जी के चरणों में समर्पित कर दिया ।

बाबा उस दिन कुछ अलग ही मूड में थे उन्होंने युवती से पूछा - तू कुछ नहीं चढ़ाएगी ?

युवती को संभवत इस प्रकार के किसी प्रश्न की उम्मीद नहीं थी । उसके पास कुछ भी नहीं था यह उसकी भाव भंगिमा से स्पष्ट दिखाई दे रहा था ।

बाबा को किसी से कुछ मांगते हुए मैंने इसके पहले नहीं सुना था ।

इसलिए हम भी आश्चर्यचकित थे ।

वह युवति सोच में पड़ गई ....

बाबा ने दोबारा पूछा - चन्दा , तू कुछ नहीं चढ़ाएगी ?

तेरे पास कुछ नहीं है क्या ?

युवती के चेहरे पर दुख के भाव आए !!!
जैसे उसकी सबसे कीमती चीज को फेंक दिया गया हो ....
लेकिन उसने कुछ नहीं कहा और प्रणाम करके वापस जाने लगी ....

जब दोनों मुड़कर जाने लगे ....
तो.....
बाबा की आवाज गूंजी - चन्दा ! माई को चांदी की नहीं सोने की बालियां चाहिए ! अगली बार सोने की बालियां लेकर आना ।

हम सभी आश्चर्य में थे ।
बाबा किसी से कुछ नहीं मांगते थे ।
उनके मुंह से एक असंभव सी बात सुनना और भी विचित्र था ।
चन्दा और उसके पिता की अवस्था ऐसी थी कि वह तो संभवत चांदी की नई बालियां भी नहीं बनवा पाते .....
उनसे महामाया के लिए सोने की बालियों की मांग करना, मुझे बेहद विचित्र लगा ।
लेकिन .....

युवती के चेहरे पर दुख के भाव आए !!!
जैसे उसकी सबसे कीमती चीज को फेंक दिया गया हो ....
लेकिन उसने कुछ नहीं कहा और प्रणाम करके वापस जाने लगी ....

जब दोनों मुड़कर जाने लगे ....
तो.....
बाबा की आवाज गूंजी - चन्दा ! माई को चांदी की नहीं सोने की बालियां चाहिए ! अगली बार सोने की बालियां लेकर आना ।

हम सभी आश्चर्य में थे ।
बाबा किसी से कुछ नहीं मांगते थे ।
उनके मुंह से एक असंभव सी बात सुनना और भी विचित्र था ।
चन्दा और उसके पिता की अवस्था ऐसी थी कि वह तो संभवत चांदी की नई बालियां भी नहीं बनवा पाते .....
उनसे महामाया के लिए सोने की बालियों की मांग करना, मुझे बेहद विचित्र लगा ।
लेकिन .....

योगियों की माया योगी ही जाने ।

उस रात बाबा ने हमें कुछ विशेष क्रियाएं और साधना पद्धति संपन्न करवाई । जिसके बाद हम को लगातार 24 घंटे तक एक ही आसन पर स्थिर होकर मंत्र जाप करना था । इसके लिए उन्होंने शिव मंदिर के भूगर्भ में स्थित एक कक्ष में हमें भेज दिया ।
सूर्य अस्त होने का समय हो रहा था रात भर मंत्र जाप संपन्न हुआ और अगले दिन सूर्यास्त के समय हमारा वह प्रक्रम पूर्ण हुआ । एक एक दिन की आड़ में इस प्रकार के तीन क्रम हमने संपन्न किए । इस पूरे काल में भोजन और जल ग्रहण करने का निषेध था । इसमें लगभग 10 दिन का समय लगा होगा , तब तक उस युवती के विषय में मन से विचार निकल चुका था ।

ग्यारहवें दिन हम लोग पुनः उसी प्रकार मंदिर के प्रांगण में बैठे हुए थे !
बाबा जी से मिलने के लिए लोग आ रहे थे ।
तभी !
एक चमचमाती हुई मर्सिडीज कार आकार रुकी ।
आश्रम मे कई प्रकार के लोग आते रहते थे, इसलिए

बड़ी गाड़ियों का आना कोई बहुत दुर्लभ घटना नहीं थी । इसलिए हम लोगों ने ध्यान नहीं दिया ।

उस गाड़ी में से ड्राइवर ने निकलकर दरवाजा खोला । एक महिला उसमें से भव्य वस्त्रों में बाहर निकली । जब वह मंदिर के अंदर आई तो उसकी शक्ल कुछ जानी पहचानी सी लगी ।

जब थोड़ा और करीब आई तो हमने उसे पहचान लिया ! यह तो वही युवती थी ....

चन्दा !

लेकिन उस दिन के वस्त्रविन्यास और आज के वस्त्रविन्यास में जमीन और आसमान का फर्क था ।

कहां वह मटमैली सी साड़ी पहने हुए युवती ! और कहां यह भव्य वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित महिला !!

लेकिन दोनों दिख तो एक जैसी ही रही थी ।

उसके हाथ में एक थाली थी ।

जिसके ऊपर लाल वस्त्र रखा हुआ था ।

संभवत थाली में भेंट रही होगी ।

हम लोगों ने सोचा कि हो सकता है मिलती जुलती शक्ल के हो ।

वह थाली लेकर बाबाजी के सामने पहुंची । उसने थाली को बाबा के चरणों में रखा और दंडवत मुद्रा में लेट गई । उसके शरीर के हिलने से आभास हो रहा था कि वह फफक फफक कर रो रही है ।

बाबा के पास चित्र विचित्र प्रकार के लोगों का आना जाना लगा रहता था .....
इसलिए इस प्रकार की स्थिति असामान्य नहीं थी !
हम लोग भी आराम से बैठे हुए थे ।
दो-चार मिनट रो लेने के बाद संभवत वह शांत हुई ।
उसने थाली के ऊपर का कपड़ा हटाया और उस थाली को बाबा के सामने रखा ।
उस सोने की थाली में रखे हुए थे सोने के दो बड़े झुमके !
कम से कम 1-1 तोले के जरूर रहे होंगे ।

बाबा के मुख से प्रचंड अट्टहास गुंजा - तुझसे सोने की बाली मांगी थी ! थाली नहीं !!
बाबा ने अपना हाथ फैला दिया !
उस महिला ने थाली में रखे हुए सोने की बालियों को बाबा के हाथ में रख दिया ।

जब यह घटना हुई तो मुझे पुरानी घटना याद आ गई और मुझे लगा कि हो ना हो यह वही युवती है ।

फिर वही हुआ .....
बाबा ने हथेली में रखे हुए झुमकों को एक हुंकार लगाते हुए मंत्र पढ़कर "समर्पयामि" कहकर हवा में उछाल दिया और वह हवा में ही गायब हो गई ।
इस घटना की पुनरावृत्ति होने से मेरे दिमाग में निश्चित हो गया कि यह वही युवती है ।
मैं आश्चर्यचकित था !
दस -ग्यारह दिनों में ऐसा रुपांतरण वास्तव में अद्भुत था ।
मेरे मन में वास्तविकता जानने की इच्छा जागृत हो गई । मैं उठकर मंदिर के दरवाजे की तरफ आ गया ताकि जाते समय उससे कुछ वार्तालाप कर सकूं ।
जब वह वापस लौट रही थी तो मैंने उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया और पूछा - क्या आप वही युवती है जो उस दिन अपने पिता के साथ यहां आई थी ।

उसने गीली आँखों से सहमति में सिर हिलाया ।

मैंने पूछा - इन 10 दिनों में आप का तो स्वरूप ही बदल गया ! ऐसा क्या हुआ ?

चन्दा बोली - बाबा के आशीर्वाद से मेरी दुनिया ही बदल गई है । उस दिन बाबा ने मुझसे मेरी बालियां मांग ली थी । मेरे पास कुल मिलाकर वही एक आभूषण था । मेरे पिता बेहद गरीब है । मां कई साल पहले चल बसी । मजदूरी करके भी उन्होंने मुझे स्कूल भेजा । स्कूल की फीस देने के बाद इतने पैसे नहीं बचते कि मैं ठीक ठाक वस्त्र भी पहन सकूं । गांव का स्कूल है इसलिए चल जाता है कोई दिक्कत नहीं होती ।
मेरे पास की वे चांदी की बालियां मेरे मां की आखिरी निशानी थी । वही एक ऐसी चीज थी , जो मेरे पास मूल्यवान थी । जब बाबा ने मुझ से भेंट की मांग की तो मुझे याद नहीं आया कि मैं क्या दूं ? आखिर मे ब दिमाग में बाली की बात याद आई तो मैंने वही उतार कर उनको दे दी ।
जब उन्होंने उसे हवा में उछाल दिया तो मुझे थोड़ा सा दुख भी हुआ और अपमानित सा भी महसूस हुआ ।

ऐसा लगा कि उन्होंने मेरी भेंट को तुच्छ समझकर इस प्रकार से फेंक दिया !!
जब उन्होंने यह कहा कि अगली बार सोने की बालियां माई को चढ़ाना .....
तो मुझे लगा कि वह मेरा मजाक उड़ा रहे हैं .....
और मेरी आंखों से आंसू निकल गए ।
लेकिन वह तो वास्तव में मेरा भाग्य बदल रहे थे ।

मैं अपनी जिज्ञासा रोक नहीं पा रहा था इसलिए मैंने पूछा - वह सब तो ठीक है । लेकिन यह पूरा रूपांतरण कैसे हुआ यह बताओ ।

उसने बताया - हम मंदिर से निकल कर वापस अपने घर की ओर जा रहे थे । रास्ते में एक चमचमाती सी गाड़ी सामने से आ रही थी । जिसे देखने से ही आभास होता था कि यह किसी रईस व्यक्ति की गाड़ी है । वह गाड़ी हमसे आगे निकल गई !
लेकिन वह कुछ दूर गई और मुड़ कर वापस आई ।
मुझे थोड़ा सा अजीब लगा !
भय का भी आभास हुआ !!

मैंने पिताजी की ओर देखा ....
वह भी थोड़े से अशांत हो गए क्योंकि रास्ता सुनसान था....
मेरी युवावस्था थी और कुछ भी हो सकता था .....

उस गाड़ी मे एक धनी व्यक्ति बैठा था , उसने पिताजी को गौर से देखा । फिर वह व्यक्ति गाड़ी से उतरा और उसने मेरे पिता को पूछा - तुम गोपाल हो ना ?

उन्होंने हाथ जोड़कर कहा – हाँ मालिक ! मेरा नाम गोपाल है । आप मुझे कैसे जानते हैं ।

इतना सुनते ही उस आदमी ने पिताजी को गले लगा लिया ।

हम इस व्यवहार से आश्चर्यचकित थे ।
उन्होंने कहा - गोपाल ! तूने मुझे नहीं पहचाना ? मैं मीठालाल हूं । हम साथ में फेक्टरी में काम करते थे ! याद आया ।

पिताजी ने अपने दिमाग पर जोर दिया और संभवतः उन्हें याद आ गया और उन्हें कहा - अरे हां ! मैंने पहचान

लिया । आप मिठालाल है । अब तो आप बहुत बड़े सेठ हो गए हैं । बहुत तरक्की कर लिया आपने । आपने इसके बावजूद मुझे पहचान लिया यह मेरा सौभाग्य है ।

मीठालाल बोले - गोपाल, अगर तुमने उस दिन मेरी मदद नहीं की होती तो आज मैं इस जगह तक नहीं पहुंच पाता ।

फिर वे हमारे साथ हमारे घर तक आए ।
मैंने उन्हें चाय बना कर पिलाई दोनों दोस्त काफी देर तक बातें करते रहे ।

सूरत की एक फर्म मे मेरे पिता गोपाल और मीठालाल दोनों हीरा घिसाई के काम में साथ साथ लग गए थे । लगभग सात आठ साल तक दोनों वही काम करते थे वही उनकी दोस्ती हुई ।

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे हीरा अपने प्राकृतिक रूप में जब मिलता है तो उसकी कीमत ज्यादा नहीं होती । जब उसे घिस कर उसके ऊपर के

कट्स बना दिए जाते हैं तब उसकी कीमत बढ़ जाती है ।

यह काम करने के लिए हीरे को घिसना पड़ता है । हीरा घिसने के दौरान बेहद सावधानी की जरूरत होती है .... वरना वह टूट जाता है ।

जो कारीगर हीरा घिसने के कला में निपुण होता है । वह धीरे-धीरे बड़े हीरो को घिसने का काम ले पाता है और उसकी आमदनी भी बढ़ती जाती है ।

यही नहीं जो अच्छे कारीगर होते हैं, उनको हीरे की पहचान भी होती है ।

इसलिए धीरे-धीरे वह हीरे के व्यापारी के रूप में भी अपने आप को स्थापित कर लेते हैं ।

मीठालाल मुंबई जाना चाहता था और उसके लिए उसे कुछ पैसों की जरूरत थी । उसने गोपाल से अपनी समस्या के बारे में बताया । गोपाल ने अपनी सारी जमा पूंजी लगभग ₹5000 उसे दे दिए । उन पैसों को लेकर मीठालाल मुंबई चला गया । किस्मत ने उसका साथ दिया है और धीरे-धीरे उसका व्यापार बढ़ता गया । वह बड़ा हीरा व्यापारी बन गया । आज वह करोड़ों की संपत्ति का मालिक हो चुका था ।

इधर गोपाल उसी फैक्ट्री में काम करता रहा लेकिन कुछ समय के बाद फैक्ट्री बंद हो गई । वह बेरोजगार हो गया । एक दुर्घटना में उसका हाथ भी टूट गया, जिसके बाद हीरा घिसाई का उसका कौशल भी जाता रहा । अब फैक्ट्री वाले भी उसे काम नहीं देते थे । इसलिए वह सूरत छोड़कर गाँव आ गया और मजदूरी करके या छोटे-मोटे काम करके इसी प्रकार अपनी जिंदगी गुजार रहा था ।

कुछ वर्षों के बाद उसकी पत्नी बीमार पड़ी और उसके इलाज में रही सही पूंजी भी समाप्त हो गई ।

लंबी बीमारी के बाद पत्नी चल बसी । अपनी इकलौती बेटी चंदा के साथ अब गांव में एक झोपड़ी में रहता था ।

उसी झोपड़ी मे गोपाल के साथ मिठालाल बैठकर चाय पी रहा था । जाते जाते मीठा लाल ने गोपाल को अगले दिन अपने घर आने का निमंत्रण दिया और विजिटिंग कार्ड भी दिया ।
गोपाल उसमे दिए पते पर गया ।

किसी राजमहल को भी मात देती हुई भव्य अट्टालिका सामने थी ।
दरवाजे पर चार गार्ड खड़े थे और आठ दस गाड़ियां अंदर चमचमाती हुई खड़ी थी !
यह सब देखकर गोपाल अंदर घुसने का साहस नहीं जुटा पाया , संकोच के मारे मीठालाल के घर नहीं गया ।
और वापस लौट गया ।

अगले दिन सुबह आठ बजे गोपाल के घर के सामने एक शानदार कार आकर खड़ी हो गई । उसमें से एक आकर्षक नवयुवक बाहर निकला और साथ में मीठा लाल जी का ड्राइवर था । उसके पीछे एक और गाड़ी आकर खड़ी हुई जिसमें से मिठालाल और उसकी पत्नी बाहर निकले ।

मीठा लाल की पत्नी भी गोपाल को जानती थी उसने गोपाल को प्रणाम किया , युवक ने चरण स्पर्श किया वह उनका इकलौता पुत्र समुद्र था ।

गोपाल अब संकोच में पड़ गया क्योंकि उसकी झोपड़ी में उनको बिठाने लायक कोई व्यवस्था भी नहीं थी और ना ही खिलाने लायक कोई चीज ।

उसकी आंखों में बेबसी के आंसू थे।
फिर भी उसने उन्हें आमंत्रित किया तीनों बड़ी सहजता से उसके घर में आकर उसकी टूटी फूटी चारपाई पर बैठ गए ।

तब तक चंदा चाय बनाने के लिए जा चुकी थी ।
कुछ ही देर में वह तीन गिलास में पानी लेकर आ गई ।
उसने तीनों को नमस्कार किया और पानी प्रस्तुत किया ।

पानी पीने के बाद मीठालाल ने कहा - गोपाल मैं आज तुमसे कुछ मांगने आया हूं । जब मैं सूरत से मुंबई जा रहा था तब भी मैं तुमसे कुछ मांगने के लिए आया था और तुमने मुझे इनकार नहीं किया था । उम्मीद करता हूं आज भी मुझे इंकार नहीं करोगे ।
गोपाल बोला - सेठ जी ! मेरे पास जो भी है वह आप देख ही रहे हैं । इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं

आपको दे सकूं , फिर भी जो आप चाहे वह आप ले सकते हैं । सब आपका ही है ।

मीठालाल बोला - गोपाल मैं अपने बेटे समुद्र के लिए तुम्हारी बेटी का हाथ मांगना चाहता हूं ।

यह बात सुनकर गोपाल सन्न रह गया ।
उसे समझ नहीं आया कि वह क्या बोले ।
वह तो यह सोच कर परेशान था कि बिटिया की शादी कैसे कर पाएगा .....
और यहां एक धन्ना सेठ अपने बेटे के लिए उसकी बिटिया का हाथ मांग रहा था ।

वह धम्म से जमीन पर बैठ गया ।
तब तक चंदा चाय लेकर आ गई ।

मीठालाल की पत्नी ने चंदा को अपने पास बिठाया और उससे पूछा - बेटा ! यह मेरा बेटा समुद्र है क्या तुम उससे शादी करके मेरे घर में लक्ष्मी के रूप में आना स्वीकार करोगी ।

चंदा ने नजरें उठाकर उस युवक को देखा ।

बेहद आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी था वह युवक ।
उसने कुछ नहीं कहा और शर्मा कर भाग गई ।

मीठालाल उठकर गोपाल के बगल में जाकर जमीन पर बैठ गया और पूछा - गोपाल ! अगर तुम्हें स्वीकार हो तो मैं तुम्हारी बेटी को अपने घर की बहू बनाना चाहता हूं ।

गोपाल मीठालाल का हाथ पकड़ कर फफक फफक कर रोने लगा । बड़ी मुश्किल से बोला - यह मेरा सौभाग्य होगा ।

मीठालाल ने बेटे को इशारा किया !
बेटे ने ड्राइवर को आवाज लगाई ।
ड्राइवर ने मिठाई और फल की टोकरी शगुन के रूप में घर के अंदर लाकर रख दिए ।

तीसरे दिन दोनों की शादी हो गई ।

चंदा बोली - यह सब कुछ इतनी तीव्रता से हुआ कि मुझे कुछ समझ में नहीं आया । हां इतना जरूर समझ गई थी कि यह बाबा का आशीर्वाद है । फिर मुझे याद

आया कि उन्होंने कहा था कि अगली बार सोने की बाली चढ़ाना । इसलिए आज मैं सोने की बाली लेकर आई थी ।

यह घटना अपने आप में पर्याप्त थी यह साबित करने के लिए कि श्री विद्या का साधक अपने भ्रू-संकेत पर रंक को राजा बनाने का सामर्थ्य रखता है ।
हमारे देखते-देखते एक गरीब युवती राजरानी बन चुकी थी !!!!
वास्तव में अद्भुत है इस राजराजेश्वरी श्री विद्या का चमत्कार .....
और धन्य है वह साधक और योगी जो इस विद्या की साधना संपन्न कर पाते हैं ।

यहाँ पर ध्यान लिंगम का पूर्वार्ध समाप्त होता है , इसके बाद का प्रकरण उत्तरार्ध मे .....

अनिल शेखर “अमस”

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
12. अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।
13. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।
14. अघोरानंद और चाँदनी महल की आत्माएं ।
15. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गं ।
16. कापालिक चंडेश्वर ।
17. कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।
18. वह रहस्यमय युवती ।

19. परेतिन की शादी ।

साधना विधियाँ :-

1. गुरुपूजन की विधियाँ ।
2. मंत्र साधना और गुरु की आवश्यकता ।
3. अकाल मृत्यु तथा रोग नाशक मंत्र ।
4. श्री गणेश पूजन की विधियाँ ।
5. महालक्ष्मी पूजन ।

पॉडकास्ट मंत्र उच्चारण :-

https://open.spotify.com/show/00vXvHwYrtTbjnjSzyOt3V

---

[1] ध्यानलिंग के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें www.dhyanalinga.org

[2] अघोरानंद और चाँदनी महल की आत्माएं - ई बुक अमेजन पर उपलब्ध है ।

[3]पूज्य पाद गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने प्रवचनों में हिमालय तथा हिमालय के आसपास